प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की भूमिका

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

बी.एड.-एम.एड. (एकीकृत) उपाधि की आंशिक सम्पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबन्ध

सत्र : 2022-25

शोध निदेशक

डॉ. त्रिलोकी प्रसाद

सहायक प्राध्यापक (शारीरिक शिक्षा)

शिक्षा विभाग

शोधार्थी

पंकज कुमार यादव

बी.एड.-एम.एड. (एकीकृत)

अनुक्रमांक - 2306600325

शिक्षा विभाग

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली)

घोषणा-पत्र

मैं, **पंकज कुमार यादव,** यह घोषणा करता हूँ कि मैंने बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल में संचालित बी.एड.-एम.एड. (एकीकृत) पाठ्यक्रम, सत्र : 2022-2025 की आंशिक सम्पूर्ति हेतु शोधकार्य संपन्न किया है। इस शोध के लिए मैंने **"प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की भूमिका"** विषय का चयन किया, जिसे मैंने आदरणीय **डॉ. त्रिलोकी प्रसाद,** सहायक प्राध्यापक (शारीरिक शिक्षा) शिक्षा विभाग, के कुशल निर्देशन एवं मार्गदर्शन में पूर्ण किया है।

यह शोध-प्रबंध मेरे द्वारा स्वयं के मौलिक प्रयास, अध्ययन और विश्लेषण पर आधारित है। इस कार्य में प्रयुक्त सभी संदर्भों, तथ्यों, विचारों एवं निष्कर्षों को मैंने यथासंभव सत्यनिष्ठा के साथ प्रस्तुत किया है। मेरे संज्ञान में यह शोध कार्य, पूर्णतः अथवा आंशिक रूप में, पूर्व में किसी अन्य विश्वविद्यालय या शैक्षणिक संस्था में किसी भी शैक्षणिक उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है, न ही इसकी पुनरावृत्ति किसी अन्य रूप में की गई है।

अतः मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रस्तुत शोध मेरा मौलिक, स्वतंत्र एवं नवाचारी प्रयास है, जिसे मैंने शैक्षणिक ईमानदारी तथा शोध नैतिकता का पूर्ण पालन करते हुए संपन्न किया है।

स्थान – भोपाल
दिनांक – 10/06/2025

पंकज कुमार यादव
बी.एड.-एम.एड. (एकीकृत)
अनुक्रमांक - 2306600325

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि **श्री पंकज कुमार यादव,** अध्ययनरत छात्र, बी.एड.-एम.एड. (एकीकृत) पाठ्यक्रम, सत्र : 2022–2025, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध **"प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की भूमिका"** शोधार्थी के मौलिक एवं स्वतंत्र अकादमिक प्रयास का प्रतिफल है। प्रस्तुत शोधकार्य निर्धारित शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति के अंतर्गत संस्थान की अनुसंधान आवश्यकताओं के अनुरूप संपन्न किया गया है।

यह शोध कार्य शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के तत्वावधान में, आदरणीय **डॉ. त्रिलोकी प्रसाद,** सहायक प्राध्यापक (शारीरिक शिक्षा), के कुशल निर्देशन एवं सतत मार्गदर्शन में संपन्न किया गया है। शोध में प्रयुक्त समस्त सामग्री, तथ्यों, आँकड़ों, विश्लेषण एवं निष्कर्षों का प्रस्तुतीकरण शैक्षणिक प्रामाणिकता एवं संदर्भ-संवेदनशीलता के मानकों के अनुरूप किया गया है, जिनमें आवश्यकतानुसार उपयुक्त स्रोतों का उल्लेख किया गया है अथवा शोधार्थी द्वारा स्वयं एकत्रित व विश्लेषित किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रतिवेदन बी.एड.-एम.एड. (एकीकृत) पाठ्यक्रम की आंतरिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया गया है, जो इस पाठ्यक्रम के शोध-अवयव के अंतर्गत एक आवश्यक शैक्षणिक दायित्व है।

स्थान – भोपाल
दिनांक – 10/06/2025

डॉ. त्रिलोकी प्रसाद
सहायक प्राध्यापक (शारीरिक शिक्षा)
शिक्षा विभाग

आभार

मैं इस शोध कार्य के सफल निष्पादन हेतु उन सभी महानुभावों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग मुझे प्राप्त हुआ।

सबसे पहले मैं अपने मार्गदर्शक आदरणीय **डॉ. त्रिलोकी प्रसाद,** सहायक प्राध्यापक (शारीरिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, के प्रति विशेष आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके मार्गदर्शन, प्रेरणा और सहयोग से यह शोध पूर्ण हो सका।

मैं आदरणीय प्राचार्य प्रो. **एस. के. गुप्ता,** पूर्व प्राचार्य **प्रो. जयदीप मंडल,** शिक्षा विभाग के अध्यक्ष **प्रो. आयुष्मान गोस्वामी,** तथा पूर्व अध्यक्ष **प्रो. बी. रमेश बाबू** के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने सदैव शैक्षणिक वातावरण को प्रोत्साहित किया।

साथ ही, मैं **प्रो. आई. बी. चुगतई, प्रो. रत्नमाला आर्य, प्रो. एन. सी. ओझा, डॉ. संजय कुमार पंडागले, डॉ. मंजु, डॉ. सौरव कुमार, डॉ. पवन कुमार, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. मधुसुदन पी. वी.** एवं **डॉ. जयंत शंकर बोरगाओंकर** का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी विद्वता और प्रेरणा ने मुझे शोध के प्रति प्रेरित किया।

मैं पुस्तकालय अध्यक्ष **डॉ. पी. के. त्रिपाठी** एवं पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों का भी धन्यवाद करता हूँ, जिनकी सहायता से मुझे आवश्यक सामग्री सहज रूप में प्राप्त हुई।

सहपाठियों, मित्रों, प्रतिभागियों (**शिक्षक, छात्र, अभिभावक**) एवं अपने परिवारजनों का भी हृदय से धन्यवाद करता हूँ, जिनके सहयोग और समर्थन के बिना यह शोध संभव न होता।

स्थान – भोपाल
दिनांक – 10/06/2025

पंकज कुमार यादव
बी.एड.-एम.एड. (एकीकृत)

अनुक्रमणिका

	शीर्षक	पृष्ठ
	घोषणा-पत्र	i
	प्रमाण-पत्र	ii
	आभार	iii
1	प्रथम अध्याय : शोध प्रस्तावना	1
1.1	प्रस्तावना	1
1.2	शिक्षा: अर्थ एवं परिभाषा	2
1.3	शिक्षा के स्तर	3
1.3.1	Foundational Stage (3-8 वर्ष)	3
1.3.2	Preparatory Stage (8-11 वर्ष)	3
1.3.3	Middle Stage (11-14 वर्ष)	3
1.3.4	Secondary Stage (14-18 वर्ष)	4
1.4	प्राथमिक शिक्षा: अर्थ एवं परिभाषा	5
1.4.1	प्राथमिक शिक्षा की स्थिति	5
1.5	भाषा: अर्थ एवं परिभाषा	6
1.5.1	भाषा की अवधारणा	7
1.6	हिंदी भाषा	9
1.7	भाषा शिक्षण: अर्थ एवं परिभाषा	9
1.8	साहित्य: अर्थ एवं परिभाषा	10
1.9	बाल साहित्य: अर्थ एवं परिभाषा	11
1.9.1	शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में बाल साहित्य की भूमिका	12
1.10	शोध की आवश्यकता	13
1.11	समस्या कथन	14
1.12	अध्ययन का उद्देश्य	14
1.13	अध्ययन में शामिल पदों की संक्रियात्मक परिभाषाएं	14
1.13.1	प्राथमिक स्तर	14
1.13.2	हिंदी शिक्षण	15
1.13.3	बाल साहित्य	15
1.14	अध्ययन का सीमांकन	15
1.15	शोध प्रश्न	16

2	द्वितीय अध्याय : साहित्य समीक्षा	17
2.1	प्रस्तावना	17
2.2	सम्बंधित साहित्य समीक्षा	18
2.3	शोध-अंतर	23
3	तृतीय अध्याय : शोध विधि	24
3.1	प्रस्तावना	24
3.2	शोध की प्रकृति एवं स्वरूप	24
3.3	शोध अध्ययन की समष्टि	25
3.4	प्रतिचयन प्रक्रिया	25
3.5	प्रदत संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण विधियाँ	25
3.5.1	शिक्षकों के लिए प्रश्नावली	25
3.5.2	विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली	25
3.5.3	अभिभावकों के लिए प्रश्नावली	26
3.6	प्रदत (डेटा) विश्लेषण की प्रक्रिया	26
4	चतुर्थ अध्याय : प्रदत विश्लेषण एवं व्याख्या	27
4.1	प्रस्तावना	27
4.2	शिक्षकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण	27
4.3	विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का विश्लेषण	30
4.4	अभिभावकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण	32
4.5	समेकित विश्लेषण एवं व्याख्या	35
5	पंचम अध्याय : सारांश, निष्कर्ष एवं अनुशंसाएँ	37
5.1	सारांश	37
5.2	निष्कर्ष	38
5.3	अनुशंसाएँ	38
5.4	सीमाएँ और भविष्य के लिए सुझाव	39
	संदर्भ सूची	40
	परिशिष्ट-I	
	परिशिष्ट-II	
	परिशिष्ट-III	

तालिकाओं की सूची			पृष्ठ
1	तालिका-3.4.1	शोध में सम्मिलित प्रमुख हितधारक	25
2	तालिका-4.2.1	शिक्षकों की प्रतिक्रिया ‘हाँ’ के रूप में	28
3	तालिका-4.2.2	शिक्षकों की प्रतिक्रिया ‘नहीं’ के रूप में	29
4	तालिका-4.3.1	विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया ‘हाँ’ के रूप में	31
5	तालिका-4.3.2	विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया ‘नहीं’ के रूप में	32
6	तालिका-4.4.1	अभिभावकों की प्रतिक्रिया ‘हाँ’ के रूप में	33
7	तालिका-4.4.2	अभिभावकों की प्रतिक्रिया ‘नहीं’ के रूप में	34
8	तालिका-4.5.1	शोध में सम्मिलित प्रमुख समूह	35
9	तालिका-4.5.2	समूह की प्रतिक्रिया ‘हाँ’ के रूप में	36
10	तालिका-4.5.3	समूह की प्रतिक्रिया ‘नहीं’ के रूप में	36

आकृतियों की सूची			पृष्ठ
1	आकृति-4.2.1	शिक्षकों की प्रतिक्रिया	28
2	आकृति-4.2.2	शिक्षकों की प्रतिक्रिया	28
3	आकृति-4.3.1	विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया	30
4	आकृति-4.3.2	विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया	31
5	आकृति-4.4.1	अभिभावकों की प्रतिक्रिया	33
6	आकृति-4.4.2	अभिभावकों की प्रतिक्रिया	33

1 प्रथम अध्याय : शोध प्रस्तावना

1.1 प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का आधार उसकी शिक्षा व्यवस्था होती है। भारत जैसे बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक देश में शिक्षा की प्रभावशीलता विशेष रूप से भाषा शिक्षण की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर दी जाने वाली शिक्षा बालकों के बौद्धिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षर ज्ञान कराना नहीं, बल्कि बच्चों में भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना और उन्हें सृजनात्मक रूप से सोचने की क्षमता प्रदान करना भी होता है। हिंदी भाषा के शिक्षण में बाल साहित्य एक प्रभावी साधन के रूप में कार्य करता है।

हिंदी भाषा हमारी मातृभाषा होने के साथ-साथ हमारे सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक और नैतिक मूल्यों की धरोहर है। भाषा का शिक्षण केवल व्याकरण और शब्दावली तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह बालकों के संपूर्ण मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास में सहायक होता है। विशेषकर प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण के लिए बाल साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। बाल साहित्य न केवल बच्चों में भाषा कौशल का विकास करता है, बल्कि उनके नैतिक, चारित्रिक और बौद्धिक स्तर को भी समृद्ध करता है।

बाल साहित्य बच्चों के मानसिक स्तर, रुचि और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखा जाता है, जिससे वे सहजता से भाषा को ग्रहण कर सकते हैं। इसमें कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, चित्र कथाएँ एवं लोककथाएँ शामिल होती हैं, जो न केवल भाषा को रोचक बनाती हैं, बल्कि बच्चों में नैतिक मूल्यों एवं रचनात्मकता का भी संचार करती हैं।

प्राथमिक स्तर पर बालकों के लिए भाषा शिक्षण की प्रक्रिया को रोचक और प्रभावी बनाने में बाल साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल बच्चों की कल्पना शक्ति को विकसित करता है, बल्कि उनकी अभिव्यक्ति क्षमता को भी निखारता है। सरल और सरस भाषा में लिखी गई कहानियाँ और कविताएँ बच्चों को हिंदी भाषा के प्रति आकर्षित करती हैं और उन्हें पढ़ने तथा समझने की प्रवृत्ति विकसित करने में सहायक होती हैं।

बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों को नए शब्द, वाक्य संरचना, व्याकरण एवं उच्चारण की जानकारी सहजता से प्राप्त होती है। यह शिक्षण को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखता, बल्कि

अनुभवात्मक और संवादात्मक बनाता है। इसके अतिरिक्त, बाल साहित्य बच्चों में सामाजिक मूल्यों, संस्कारों एवं समसामयिक विषयों की समझ विकसित करने में भी सहायक होता है।

इस शोध प्रबंध का उद्देश्य **"प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की भूमिका"** का विश्लेषण करना है। इसमें यह अध्ययन किया जाएगा कि बाल साहित्य किस प्रकार भाषा शिक्षण को सरल और प्रभावी बनाता है तथा बालकों के समग्र व्यक्तित्व विकास में योगदान देता है।

1.2 शिक्षा: अर्थ एवं परिभाषा

'शिक्षा' शब्द संस्कृत की 'शिक्ष' धातु से निकला है, जिसका अर्थ है – सीखना-सिखाना, जानना या बौद्धिक विकास करना। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मानव अपने जीवन के उद्देश्य, व्यवहार, ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्यों को अर्जित करता है।

संसार के महान नेता महात्मा गाँधी ने कुछ समय पूर्व कहा था कि शिक्षा और जीवन का क्षेत्र समान होना चाहिए। यही नहीं, उन्होंने यह भी कहा था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह जीवन की रक्षा कर सके। ऐसी बात पहली बार किसी सामाजिक और आध्यात्मिक नेता ने कही थी। दूसरी ओर, विज्ञान ने भी इस बात का अनुमोदन किया है कि समस्त जीवन के लिए शिक्षा का विस्तार व्यवहार में सम्भव हो सकता है। **(श्रीवास्तव, 2006)**

महात्मा गांधी ने कहा कि "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा के अंतर्निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण विकास से।" **(अग्रवाल & भोला, 2014)**

डॉ० ए० एस० अल्तेकर का कथन है – "ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है, जो उसे समस्त तत्वों के मूल को समझने में समर्थ बनाता है, तथा उसे सही कार्यों में प्रवृत्त करता है।" **(श्रीवास्तव, 2006)**

अरस्तु के अनुसार – "शिक्षा व्यक्ति की शक्ति का, विशेष रूप से मानसिक शक्ति का विकास करती है जिससे कि वह परम् सत्य, शिव तथा सुन्दर के चिंतन का आनन्द उठा सके।" **(अग्रवाल & भोला, 2014)**

महाभारत का कथन है – "नास्ति विद्या समं चक्षु नास्ति सत्यं समं तपः।।" जिसका अर्थ है – "विद्या के समान कोई दूसरा नेत्र नहीं होता।" **(श्रीवास्तव, 2006)**

"शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है।" **(राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)**

शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली एक प्रक्रिया है जो व्यक्ति को पशुत्व से देवत्व की ओर ले जाती है। पशुत्व में संकीर्णता तथा देवत्व में विशदता निहित होती है। दूसरे शब्दों में – मानवीय मूल्यों का विकास करने में शिक्षा की महती आवश्यकता होती है। शिक्षा व्यक्ति को वास्तविक शक्ति से सम्पन्न करती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा किसी समाज में निरंतर चलने वाली एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आंतरिक शक्तियों को विकसित करता है, ज्ञान और कौशल प्राप्त करता है, और अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है। यह व्यक्ति को समाज में सकारात्मक योगदान करने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।

1.3 शिक्षा के स्तर

भारत की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को निम्नलिखित चार चरणों में बाँटा गया है **(राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)**:

1.3.1 Foundational Stage (3-8 वर्ष)

इस चरण में बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया जाता है और यह कुल 5 वर्षों का होता है, जिसमें 3 वर्ष पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (आँगनवाड़ी, नर्सरी, के.जी.) और 2 वर्ष कक्षा 1 एवं 2 शामिल होते हैं। यह चरण बच्चों के मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक और भाषा विकास की नींव रखता है। इसमें शिक्षा को खेल आधारित, गतिविधि केंद्रित और खोजपरक बनाया गया है, जिससे बच्चे सहज रूप से सीख सकें। मातृभाषा या स्थानीय भाषा को इस स्तर पर शिक्षण का प्रमुख माध्यम बनाने की सिफारिश की गई है ताकि बच्चों को अपनी भाषा में सोचने और अभिव्यक्त करने में आसानी हो।

1.3.2 Preparatory Stage (8-11 वर्ष)

यह चरण 3 वर्षों (कक्षा 3 से 5) का होता है और इसमें बच्चे औपचारिक विषयों की ओर अग्रसर होते हैं। इस स्तर पर पठन-पाठन, लेखन, गणितीय सोच, विज्ञान, कला और सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों की मूलभूत जानकारी दी जाती है। शिक्षण पद्धति को अभी भी गतिविधि-आधारित, संवादात्मक एवं प्रयोगात्मक रखा गया है, ताकि छात्रों की रचनात्मकता और तार्किक क्षमता का विकास हो सके। यह चरण बच्चों को अधिक संगठित ढंग से सीखने के लिए तैयार करता है।

1.3.3 Middle Stage (11-14 वर्ष)

यह चरण कक्षा 6 से 8 तक का होता है, जिसमें विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को और अधिक गहराई तथा विविधता प्रदान की जाती है। इस स्तर पर विषयों को अधिक व्यवस्थित और अवधारणा

आधारित (conceptual) रूप में पढ़ाया जाता है। कोडिंग, व्यावसायिक शिक्षा, परियोजना आधारित शिक्षण और कौशल विकास की शुरुआत इसी चरण से होती है। विद्यार्थियों को आलोचनात्मक सोच और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह चरण शैक्षिक दृष्टि से परिवर्तनकारी माना गया है क्योंकि यही वह समय है जब छात्र अपनी रुचियों और क्षमताओं की पहचान करना शुरू करते हैं।

1.3.4 Secondary Stage (14-18 वर्ष)

यह अंतिम चरण कक्षा 9 से 12 तक फैला होता है और इसे दो उप-चरणों (9–10 और 11–12) में बाँटा गया है। इस स्तर पर शिक्षा को विषय-आधारित और बहुविकल्पीय बनाया गया है, जिससे विद्यार्थी अपनी रुचियों, क्षमताओं और करियर लक्ष्यों के अनुरूप विषयों का चयन कर सकें। इस चरण में आलोचनात्मक सोच, संवाद कौशल, नैतिक शिक्षा, करियर मार्गदर्शन और जीवन कौशल पर विशेष ध्यान दिया जाता है। बोर्ड परीक्षाओं को अधिक योग्यता आधारित (competency-based) और वास्तविक मूल्यांकन केंद्रित बनाने का प्रयास किया गया है, जिससे छात्र केवल रट्टा न मारें बल्कि विषयवस्तु को समझें और उसका व्यावहारिक उपयोग कर सकें।

इन चारों चरणों के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पिछला 10+2 वाली स्कूली व्यवस्था को 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षण-शास्त्रीय आधार पर 5+3+3+4 की एक नयी व्यवस्था में पुनर्गठित करने की बात करती है। जो भारत की शिक्षा व्यवस्था को अधिक समग्र, लचीली, समावेशी और कौशलोन्मुख बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

आज यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जा चुका है कि मानव समाज की प्रगति का मार्ग केवल शिक्षा से होकर गुजरता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि व्यक्ति की मानसिक चेतना, सामाजिक व्यक्तित्व और वैश्विक नागरिकता की भावना को जागृत करना होना चाहिए। सच्चा परिवर्तन तभी संभव है जब हम बच्चों की छिपी प्रतिभाओं को विकसित करने पर ध्यान दें, क्योंकि वही नए संसार की नींव रख सकते हैं। इस दिशा में प्राथमिक शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो भविष्य के विकास के लिए एक मजबूत आधार तैयार करती है।

1.4 प्राथमिक शिक्षा: अर्थ एवं परिभाषा

प्राथमिक शिक्षा शिक्षा की वह प्रारंभिक अवस्था है, जहाँ बच्चे औपचारिक शिक्षण प्रक्रिया से प्रथम बार जुड़ते हैं। यह शिक्षा बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास की आधारशिला होती है। यह न केवल साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान की नींव रखती है, बल्कि बच्चों में नैतिक मूल्यों, सामाजिकता, अभिव्यक्ति, अनुशासन और रचनात्मकता का भी विकास करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, Preparatory Stage (प्राथमिक स्तर) कक्षा 3 से 5 तक फैली होती है, जो Foundational Stage के बाद आती है। यह स्तर बच्चों में पढ़ना, समझना, संवाद करना, गणना करना, और तर्क करना जैसी क्षमताओं को विकसित करने के लिए अत्यंत आवश्यक माना गया है।

"प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बालकों में बुनियादी साक्षरता, संख्यात्मकता, और संज्ञानात्मक क्षमता का विकास करना है, जिसमें सीखना, जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ावा देना प्रमुख होता है।" **(राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)**

इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा औपचारिक शिक्षा की प्रारंभिक कड़ी और उसकी आधारशिला होती है, जो बालक के सामाजिक और बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अर्थात् यह शिक्षा प्रणाली की वह प्रथम सीढ़ी है जिस पर आगे की सम्पूर्ण शैक्षिक संरचना टिकी होती है। अतः यदि यह नींव मजबूत होगी, तो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रगति भी सुनिश्चित हो सकेगी। इसे प्रारम्भिक, बुनियादी या आधारभूत शिक्षा जैसे अन्य नामों से भी जाना जाता है, जिनका मूल उद्देश्य एक ही होता है – बालक को समग्र विकास हेतु तैयार करना।

1.4.1 प्राथमिक शिक्षा की स्थिति

वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा में वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। भारत सरकार ने भी प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ करने हेतु कई कदम उठाए हैं। संविधान की धारा 45 में यह प्रावधान किया गया था कि राज्य, संविधान लागू होने के 10 वर्षों के भीतर 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने का प्रयास करेगा। हालांकि यह लक्ष्य अभी पूरी तरह प्राप्त नहीं हो सका है। शिक्षा पहले राज्य सूची का विषय थी, लेकिन 1977 में इसे समवर्ती सूची में शामिल कर दिया गया, जिससे यह केंद्र और राज्य दोनों की संयुक्त जिम्मेदारी बन गई। 86वें संविधान संशोधन के तहत

6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया गया है, जिसे अब किसी भी बच्चे से वंचित नहीं किया जा सकता।

1.5 भाषा: अर्थ एवं परिभाषा

'भाषा' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'भाष्' धातु से हुई है जिसका अर्थ है 'भाष् व्यक्तायां वाचि' अर्थात् व्यक्त वाणी। 'भाष्यते व्यक्तवाग् रूपेण अभिव्यज्यते इति भाषा' अर्थात् भाषा उसे कहते हैं जो व्यक्त वाणी के रूप में अभिव्यक्ति की जाती है। दूसरे शब्दों में, 'भाषा' का अर्थ है– विचारों, भावनाओं, जानकारियों आदि को व्यक्त करने का एक माध्यम। यह अभिव्यक्ति शब्दों, ध्वनियों, संकेतों या प्रतीकों के माध्यम से की जाती है। भाषा से मनुष्य एक-दूसरे से संवाद कर पाता है।

कुछ विद्वानों ने भाषा को निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया है –

- **पतंजलि**– "व्यक्ता वाचि वर्णा येषा त इमे व्यक्तवाचः" अर्थात् जो वाणी वर्णों में व्यक्त हो उसे भाषा कहते हैं। **(पाण्डेय & पाण्डेय, 2020)**
- **कामता प्रसाद 'गुरु'**– "भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकते हैं।" **(पाण्डेय & पाण्डेय, 2020)**
- **डॉ० श्याम सुन्दरदास**– "मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।" **(पाण्डेय & पाण्डेय, 2020)**
- **डॉ० मंगलदेव शास्त्री**– "भाषा मनुष्यों की उस चेष्टा या व्यापार को कहते है, जिससे मनुष्य अपने उच्चारणोपयोगी शरीरावयवों से उच्चारण किये गये वर्णात्मक या व्यक्त शब्दों द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं।" **(पाण्डेय & पाण्डेय, 2020)**
- **बाबू राम सक्सेना**– "जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उनको समष्टि रूप से भाषा कहते हैं।" **(पाण्डेय & पाण्डेय, 2020)**
- **डॉ० भोलानाथ तिवारी**– "भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन हो सके।" **(पाण्डेय & पाण्डेय, 2020)**

- **आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा**– "भाषा यादृच्छिक, रूढ़ उच्चारित संकेत की वह प्रणाली है जिसके माध्यम से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय सहयोग अथवा भावाभिव्यक्ति करते हैं।" **(पाण्डेय & पाण्डेय, 2020)**

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि "भाषा यादृच्छिक, मानव मुख से उच्चारित सार्थक ध्वनियों का वह समूह है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों को एक दूसरे के साथ आदान-प्रदान करते हैं।"

1.5.1 भाषा की अवधारणा

भाषा कोई ठोस वस्तु नहीं है जिसे प्रत्यक्ष रूप से दिखाकर यह कहा जा सके कि यही भाषा है। इसका कोई भौतिक आकार, रूप अथवा रंग नहीं होता, जिसे इंद्रियों द्वारा अनुभव किया जा सके। तो फिर भाषा क्या है?

भाषा वस्तुतः एक व्यवस्था (System) है, जो पूर्णतः अमूर्त होती है। व्यवस्था का तात्पर्य होता है– ऐसी संरचना जिसमें एक से अधिक तत्व होते हैं, और वे तत्व कुछ निश्चित नियमों के अधीन एक-दूसरे से संबद्ध होते हैं। इस प्रकार, भाषा को एक नियोजित एवं संगठित अमूर्त संरचना के रूप में समझा जा सकता है, जो अपने घटकों (जैसे– ध्वनि, शब्द, व्याकरण आदि) तथा नियमों के द्वारा कार्य करती है। **(प्रसाद, भाषा और भाषा प्रोद्योगिकी, 2020)**

सूत्र रूप में इसे इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:

भाषा = (इकाइयाँ + नियम) ⟶ एक सुसंगठित अमूर्त प्रणाली

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भाषा एक व्यवस्थित प्रणाली (System) है, जिसकी मूलभूत इकाई स्वनिम (Phoneme) होती है। स्वनिम ऐसे ध्वनि प्रतीक होते हैं जो स्वयं में अर्थहीन होते हैं। किसी भी भाषा में स्वनिमों की संख्या सीमित होती है– जैसे हिंदी में लगभग 50 स्वनिम माने जाते हैं; किन्तु इन स्वनिमों में से कोई भी एक अकेले प्रयोग होने पर अर्थ प्रदान नहीं करता।

उदाहरणस्वरूप, हिंदी के कुछ स्वर और व्यंजन देखें :

- **स्वर** – अ, आ, इ, ई, ...
- **व्यंजन** – क, ख, ग, घ, ...

इनमें से यदि केवल ‘अ/ आ/ इ/ ई’ अथवा ‘क/ ख/ ग/ घ’ को अलग-अलग देखा जाए, तो उनका कोई स्पष्ट अर्थ नहीं बनता। जैसे, 'क' शब्द सुनकर कोई निश्चित अर्थ-छवि मन में नहीं उभरती। परन्तु जब इन स्वनिमों को अन्य स्वनिमों के साथ संयोजित किया जाता है, तब वे अर्थपूर्ण शब्दों का निर्माण करते हैं।

उदाहरण के लिए:

- **कन** = किसी चीज का बहुत छोटा अंश या टुकड़ा
- **कर** = टैक्स या हाथ

जब हम इसी शब्द में ‘आ’ स्वर मात्र के रूप में जोड़ दें, तब:

- **कान** = सुनने की इँद्रिय
- **कार** = परिवहन हेतु वाहन

इस प्रकार, भाषा की अर्थवत्ता स्वनिमों के अकेले प्रयोग में नहीं, बल्कि उनके संयोजन और संदर्भ में निहित होती है। यही कारण है कि भाषा को केवल ध्वनि का संग्रह न मानकर, एक सुसंगठित एवं नियमबद्ध अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया समझा जाना चाहिए।

अतः स्पष्ट है कि भाषा एक सुसंगठित व्यवस्था है, जिसके माध्यम से व्यक्ति न केवल विचार करता है, बल्कि उन्हें दूसरों के साथ साझा भी करता है। हमारे मस्तिष्क में विचारों, भावनाओं एवं सूचनाओं का जो संग्रह होता है, उसे भाषाविज्ञान की दृष्टि से ‘अर्थ’ (Meaning) कहा जाता है। इन अमूर्त विचारों की अभिव्यक्ति के लिए हम ध्वनियों (Sounds) का उपयोग करते हैं। इस प्रकार भाषा, ध्वनि और अर्थ के मध्य एक सेतु का कार्य करती है।

विचारों के संप्रेषण की इस प्रक्रिया में दो प्रमुख पक्ष होते हैं– **वक्ता** (Speaker) और **श्रोता** (Listener)। सबसे पहले वक्ता के मन में कोई विचार (Idea) उत्पन्न होता है, जिसे वह भाषा के नियमों के अनुसार ध्वनियों के रूप में रूपांतरित करता है और उसे मुख से उच्चरित करता है। यह उच्चरित ध्वनि तरंगों के रूप में श्रोता तक पहुँचती है, जहाँ उसका मस्तिष्क उन ध्वनियों से अर्थ ग्रहण करता है।

इस संप्रेषणीय प्रक्रिया में भाषा की दोहरी भूमिका होती है :

- **वक्ता के लिए,** विचारों को ध्वनि-समूहों (शब्दों/वाक्यों) में बदलने की।
- **श्रोता के लिए,** उन ध्वनियों से अर्थ को पुनः ग्रहण करने की।

अतः भाषा केवल शब्दों का समुच्चय नहीं, बल्कि एक जीवंत प्रक्रिया है जो विचारों के आदान-प्रदान को संभव बनाती है। शब्दों और वाक्यों के रूप में व्यवस्थित ध्वनि-समूहों के माध्यम से व्यक्ति न केवल संप्रेषण करता है, बल्कि सामाजिक संबंध, ज्ञान, संस्कृति और चेतना का निर्माण भी करता है।

1.6 हिंदी भाषा

हिंदी भाषा भारत की राजभाषा (Official Language) है और विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक मानी जाती है। यह इंडो-आर्यन भाषा परिवार की सदस्य है और इसका विकास संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और खड़ी बोली के क्रमिक रूपांतरण से हुआ है। यह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जो एक ध्वन्यात्मक लिपि है। इसकी ध्वनि, संरचना, शब्द भंडार एवं व्याकरणिक प्रणाली इसे एक सशक्त और वैज्ञानिक भाषा बनाती है।

हिंदी उत्तर भारत की संपर्क भाषा होने के साथ-साथ प्रशासन, शिक्षा, साहित्य, और संचार का भी सशक्त माध्यम है। वर्तमान में यह भाषा भारत के विभिन्न राज्यों, विशेषकर उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, झारखंड, छत्तीसगढ़, हरियाणा, और दिल्ली आदि में व्यापक रूप से बोली, पढ़ी और समझी जाती है। यह संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में प्रमुख स्थान रखती है और संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, "हिंदी भारत संघ की राजभाषा होगी और इसका लिप्यांकन देवनागरी लिपि में किया जाएगा।"

इस प्रकार हिंदी भाषा न केवल एक अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि यह भारत की आत्मा और संस्कृति की संवाहक है। यह भाव, विचार, ज्ञान, कल्पना और राष्ट्रीय चेतना की वाहक है। शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी की भूमिका विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण है, जहाँ यह बच्चों के व्यक्तित्व विकास, भावनात्मक बौद्धिकता और रचनात्मकता को सहज रूप से अभिव्यक्त करने में सहायक होती है।

1.7 भाषा शिक्षण: अर्थ एवं परिभाषा

भाषा शिक्षण का तात्पर्य है– किसी भाषा को व्यवस्थित रूप से सिखाने की प्रक्रिया, जिसमें बच्चों को सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना सिखाया जाता है। इसका उद्देश्य केवल व्याकरण या शब्द याद कराना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में भाषाई कौशलों का समग्र विकास कर भाषा के प्रयोग में दक्ष बनाना है, ताकि वे अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को प्रभावी रूप से व्यक्त कर सकें।

अर्थात् भाषा शिक्षण एक सुनियोजित शैक्षिक प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थियों को भाषा की चार मूल दक्षताओं– सुनना/श्रवन, बोलना/भाषण, पढ़ना/पठन और लिखना/लेखन का अभ्यास कराया जाता है। उदाहरण के लिए, जब हम हिंदी भाषा सिखाते हैं तो केवल शब्द या व्याकरण नहीं, बल्कि संवाद, भाव, अभिव्यक्ति और समझ भी विकसित करते हैं।

प्रो. धनजी प्रसाद के अनुसार, "औपचारिक रूप से भाषा सिखाने की प्रक्रिया' भाषा शिक्षण कहलाती है।" **(प्रसाद, भाषा और भाषा प्रोद्योगिकी, 2021)**

भाषा शिक्षण केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं, बल्कि एक जीवंत, संवादात्मक और रचनात्मक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विद्यार्थियों को भाषा के संरचनात्मक, संप्रेषणात्मक और व्यावहारिक पक्षों से परिचित कराया जाता है। अतः एक सफल भाषा शिक्षण वह है, जो बच्चों को बोलने, पढ़ने, लिखने और समझने के लिए उत्साहित करे तथा उन्हें भाषा का प्रयोग करने में सक्षम बनाए।

1.8 साहित्य: अर्थ एवं परिभाषा

साहित्य दो शब्दों से मिलकर बना है– 'सहित' और 'अ्य'। 'सहित' शब्द का अर्थ है हित के साथ (स + हित)। अर्थात वह सामग्री या रचना जो समाज के हित में हो, वह साहित्य कहलाती है। सीधे शब्दों में कहें तो, साहित्य वह रचना है जो मनुष्य के विचारों, भावनाओं, अनुभवों और कल्पनाओं को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा– "निखिल विश्व के साथ एकत्व की साधना ही साहित्य है।" **(सर्वेश, 2012)**

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार– "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिंब होता है। जनसामान्य की वृत्ति में परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता रहता है।" **(पाण्डेय श. , 2014)**

प्रस्तुत परिभाषा से स्पष्ट होता है कि साहित्य उस समय, समाज, संस्कृति और परंपरा तक हमारी पहुँच को भी सुनिश्चित करता है जहाँ तक हमारी भौतिक पहुँच संभव नहीं रह जाती है। अतः साहित्य केवल कल्पना नहीं, बल्कि समाज का दर्पण होता है, जो समाज की सच्चाइयों, संघर्षों, संस्कारों और संवेदनाओं को शब्दों में ढालता है तथा समाज के बौद्धिक, सांस्कृतिक और नैतिक पक्षों को उजागर करते हुए संवेदनशीलता और मानवीयता का विकास करता है।

शिक्षण के क्षेत्र में साहित्य की भूमिका:

- शिक्षक साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों के भाषा कौशल, भावना, और विचार क्षमता का विकास करते हैं।
- विशेषकर बाल साहित्य, बच्चों को भाषा सीखने के साथ-साथ नैतिक मूल्यों और जीवन-दृष्टि से भी जोड़ता है।
- कहानियाँ, कविताएँ और नाटक छात्रों में रुचि, अनुकरण, और सहभागिता को बढ़ाते हैं।

इस प्रकार साहित्य केवल पढ़ने की चीज नहीं, बल्कि जीने की कला है। यह न केवल मनोरंजन करता है बल्कि शिक्षण और चिंतन का भी माध्यम है। यदि हम बच्चों को भावनात्मक, नैतिक और बौद्धिक रूप से समृद्ध बनाना चाहते हैं, तो साहित्य को उनके जीवन और शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाना होगा।

1.9 बाल साहित्य: अर्थ एवं परिभाषा

बाल साहित्य वह साहित्य है जो विशेष रूप से बच्चों की आयु, मानसिक स्तर, रुचि, कल्पनाशक्ति और अनुभवों को ध्यान में रखते हुए रचना किया जाता है। यह साहित्य बालकों के मनोविज्ञान के अनुरूप होता है, जिसमें उनकी जिज्ञासा, संवेदनशीलता, बौद्धिक स्तर और भावनात्मक पक्ष को विशेष महत्व दिया जाता है। सरल शब्दों में, वह समस्त साहित्य जो बच्चों के लिए उनकी समझ और रुचि के अनुसार लिखा गया हो, बाल साहित्य कहलाता है। इसमें कहानियाँ, कविताएँ, लोरियाँ, बाल नाटक, चित्रकथाएँ, लोककथाएँ, हास्य रचनाएँ, बाल उपन्यास, संस्मरण, शिक्षाप्रद लेख तथा बाल-पत्रिकाएँ आदि सम्मिलित होते हैं। यह साहित्य मनोरंजन के साथ-साथ नैतिक शिक्षा, भाषा विकास, सामाजिक मूल्यों की समझ, कल्पनाशक्ति के विस्तार और विचारशीलता को प्रोत्साहित करता है।

बाल साहित्य का प्रमुख उद्देश्य न केवल बच्चों का मनोरंजन करना है, बल्कि उन्हें विभिन्न जीवन मूल्यों से जोड़ना, भाषा की सौंदर्यता का अनुभव कराना और उन्हें आत्म-अभिव्यक्ति तथा रचनात्मकता की ओर उन्मुख करना भी है। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चे स्वर, शब्द और विचारों के प्रयोग में दक्ष होते हैं, जो उनकी शैक्षिक सफलता का आधार बनता है। आज के संदर्भ में बाल साहित्य न केवल परंपरागत कहानियों तक सीमित है, बल्कि यह विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला, तथा अन्य समसामयिक विषयों को भी रोचक और बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार यह बच्चों के समग्र विकास– शैक्षिक, सामाजिक, नैतिक तथा भावनात्मक आदि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रसिद्ध साहित्यकार **डॉ. हरिकृष्ण देवसरे** के अनुसार, “बाल साहित्य वह साहित्य है, जिसमें बाल मन की जिज्ञासा, कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता, साहस, कौतुहल, एवं संस्कारों का समन्वय होता है।”

डॉक्टर सुरेंद्र विक्रम तथा **जवाहर इंदु** ने कहा– “बाल मनोविज्ञान का अध्ययन किए बिना कोई भी रचनाकार स्वस्थ एवं सार्थक बाल साहित्य का सृजन नहीं कर सकता। यह बिल्कुल निर्विवाद सत्य है कि बच्चों के लिए साहित्य लिखना सबके बस की बात नहीं है। बच्चों का साहित्य लिखने के लिए रचनाकार को स्वयं बच्चा बन जाना पड़ता है। यह स्थिति तो बिल्कुल परकाया प्रवेश वाली है।” **(आकांक्षा, 2024)**

बाल साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान **सोहनलाल द्विवेदी** ने बाल साहित्य को स्पष्ट करते हुए कहा है– “बाल साहित्य वही है जिसे बच्चा सरलता से अपना सके और भाव ऐसे हो जो बच्चों के मन को भाए, यूं तो साहित्यकार बालकों के लिए लिखते रहते हैं किंतु सचमुच जो बालकों के मन की बात बालकों की भाषा में लिख दे वही सफल बाल साहित्य लेखक है।” **(आकांक्षा, 2024)**

इस प्रकार बाल साहित्य बच्चों के स्वाध्यायन को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, उन्हें नए और रोमांचक ज्ञान के साथ परिचित कराती हैं और उनकी भाषा, बुद्धि और सामाजिक दक्षता को विकसित करने में मदद करती हैं।

1.9.1 शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में बाल साहित्य की भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बाल साहित्य को भाषा शिक्षण और समग्र विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना गया है। विशेषकर प्रारंभिक शिक्षा (Foundational Stage एवं Preparatory Stage) में बाल साहित्य के माध्यम से शिक्षण को बाल-केंद्रित, अनुभव-आधारित और रचनात्मक बनाया जा सकता है। प्राथमिक शिक्षा में हिंदी भाषा शिक्षण के दौरान बाल साहित्य का समावेश बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। इसकी प्रमुख भूमिकाएँ निम्नलिखित हैं:

1. भाषा कौशल का विकास: बाल साहित्य सुनने, पढ़ने, लिखने और बोलने की क्षमता को विकसित करता है।
2. शिक्षण को रुचिकर बनाना: कहानियाँ और कविताएँ बच्चों को नीरस भाषा शिक्षण से बचाती हैं और रुचि बढ़ाती हैं।

3. संस्कारों का संचार: नैतिक शिक्षाप्रद कहानियाँ बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित करने में सहायक होती हैं।
4. रचनात्मकता का विकास: बाल साहित्य बच्चों में कल्पनाशीलता और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है।
5. सामाजिक समरसता एवं मानवीय मूल्य: बच्चों को विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों से परिचित कराता है।

1.10 शोध की आवश्यकता

शोध शब्द अंग्रेज़ी के research शब्द का हिंदी रूपांतरण है। research स्वयं दो शब्दों– 're' तथा 'search' से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है: "पुनः खोज" या "फिर से तलाश करना"। इस दृष्टि से, शोध का तात्पर्य उस व्यवस्थित प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से किसी विषय में नवीन ज्ञान की प्राप्ति की जाती है अथवा पूर्ववर्ती ज्ञान को नवदृष्टि से देखा और समझा जाता है। यह एक ऐसी बौद्धिक एवं तार्किक गतिविधि है, जो मनुष्य की जिज्ञासा और ज्ञान-पिपासा को संतुष्ट करने हेतु की जाती है। शोध न केवल किसी समस्या के समाधान की दिशा में एक प्रयास होता है, बल्कि यह किसी विषय के गहन विश्लेषण, तथ्य-परक परीक्षण और नवीन निष्कर्षों की ओर अग्रसर होने की प्रक्रिया भी है।

पी. वी. यंग: "शोध एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिसके द्वारा नवीन तथ्यों को खोजने अथवा पुराने तथ्यों की विषयवस्तु, उनकी क्रमबद्धता, अन्तः सम्बन्ध, कार्य कारण व्याख्या और उनके निहित नैसर्गिक नियमों के पुष्टिकरण का कार्य किया जाता है। **(मंगल & मंगल, 2014)**

अमेरिकन कॉलेज डिक्शनरी, 1967: "शोध से अभिप्राय तथ्यों एवं प्रनियमों की खोज हेतु किसी विषय विशेष में की जाने वाली परिश्रमपूर्ण एवं सुव्यवस्थित पूछताछ या जाँच पड़ताल से है।" **(मंगल & मंगल, 2014)**

वर्तमान यांत्रिक और परीक्षा-केंद्रित शिक्षा प्रणाली में बाल साहित्य की उपेक्षा हो रही है, जबकि यह बच्चों के भाषा कौशल, रचनात्मकता, और नैतिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। बाल साहित्य, जैसे कहानियाँ, कविताएँ, और चित्रकथाएँ, न केवल बच्चों को भाषा सीखने में मदद करती हैं, बल्कि उनकी सोच, संवाद और सामाजिक मूल्यों को भी विकसित करती हैं।

आज के डिजिटल युग में बच्चों का ध्यान किताबों से हटकर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की ओर बढ़ रहा है, ऐसे में हिंदी शिक्षण को अधिक प्रभावी और रुचिकर बनाने के लिए बाल साहित्य का उपयोग अनिवार्य हो गया है। यह शोध बाल साहित्य के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण को रोचक, प्रभावी और समृद्ध बनाने के तरीकों पर गहन अध्ययन करेगा, ताकि बच्चों की भाषा सीखने की प्रक्रिया को सहज और आकर्षक बनाया जा सके।

1.11 समस्या कथन

"प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की भूमिका"

1.12 अध्ययन का उद्देश्य

1. बाल साहित्य का बच्चों के अध्ययन से उनके व्यवहार में आने वाले परिवर्तन का अध्ययन करना।
2. बाल साहित्य का बच्चों के अध्ययन से उनके भाषा शैली में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन करना।
3. पढ़ने की आदत में परिवर्तन का विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रभाव का अध्ययन करना।

1.13 अध्ययन में शामिल पदों की संक्रियात्मक परिभाषाएं

वर्तमान शोध अध्ययन के अनुसार तीन प्रमुख पद हैं, जिसकी संक्रियात्मक परिभाषाएँ निम्नलिखित है, जो शोध की प्रकृति और सीमाओं को स्पष्ट करती हैं:

1.13.1 प्राथमिक स्तर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, शिक्षा को विभिन्न चरणों में बाँटा गया है, जिसमें Foundational, Preparatory, Middle और Secondary स्तर प्रमुख हैं। इस शोध में प्राथमिक स्तर से आशय नीति के Preparatory Stage से है, जो कक्षा 3 से 5 तक की अवधि को कवर करता है। यह वह अवस्था है जहाँ बच्चों की मौलिक भाषा दक्षताओं, संज्ञानात्मक क्षमताओं एवं सामाजिक व्यवहार की नींव को सुदृढ़ किया जाता है।

वर्तमान शोध में "प्राथमिक स्तर" का सीमित और संक्रियात्मक संदर्भ बिहार राज्य के समस्तीपुर जिला के जलालपुर पंचायत स्थित प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा 3 से 5 तक के विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों से लिया गया है। यह वह स्तर है जहाँ हिंदी भाषा का औपचारिक शिक्षण आरंभ होता है और बाल साहित्य का प्रयोग अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

1.13.2 हिंदी शिक्षण

हिंदी शिक्षण का उद्देश्य न केवल भाषा को एक विषय के रूप में पढ़ाना है, बल्कि उसे संवाद, अभिव्यक्ति और चिंतन के माध्यम के रूप में स्थापित करना भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भाषा शिक्षण को बच्चे के परिवेश से जुड़ा, अर्थपूर्ण एवं बाल-केन्द्रित बनाने की वकालत करती है। नीति इस बात पर बल देती है कि मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण प्रारंभिक वर्षों में अधिक प्रभावी होता है।

इस शोध के संदर्भ में "हिंदी शिक्षण" का आशय उस समस्त शिक्षण प्रक्रिया से है जिसमें शिक्षकों द्वारा हिंदी भाषा को बाल साहित्य, संवाद, गतिविधियों एवं रचनात्मक अभ्यासों के माध्यम से बच्चों को पढ़ाया जाता है। इसमें भाषा की चारों मूल दक्षताएँ– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल होती हैं, और यह बाल साहित्य के संदर्भ में विश्लेषित की जाती है।

1.13.3 बाल साहित्य

बाल साहित्य शिक्षा का एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो बच्चों के मनोवैज्ञानिक, भाषाई और नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट रूप से यह कहा गया है कि "शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान के साथ-साथ कल्पना शक्ति, रचनात्मकता और मूल्यों का विकास भी होना चाहिए।" बाल साहित्य इन सभी पहलुओं को आत्मसात करता है।

इस शोध में 'बाल साहित्य' को एक शिक्षण उपकरण के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें कहानियाँ, कविताएँ, चित्रकथाएँ, लोककथाएँ, बाल नाटक, बाल गीत, तथा बाल पत्रिकाएँ सम्मिलित हैं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को रुचिकर और संवादी तरीक़े से भाषा से जोड़ना तथा उनके भीतर कल्पना शक्ति, सहानुभूति और भावनात्मक बौद्धिकता का विकास करना है।

1.14 अध्ययन का सीमांकन

किसी भी शोध कार्य की स्वाभाविक विशेषता होती है कि वह किसी सीमित क्षेत्र, समय, संसाधन, अथवा विधि के अंतर्गत संचालित होता है। प्रस्तुत अध्ययन भी पूर्णतः एक नियत सीमा में रहते हुए सम्पन्न किया गया है। निम्नलिखित बिंदुओं में इस शोध की प्रमुख सीमाओं का उल्लेख किया जा रहा है:

- **भौगोलिक सीमांकन:**

  यह अध्ययन बिहार राज्य के समस्तीपुर जिला के जलालपुर पंचायत के अंतर्गत आने वाले प्राथमिक विद्यालयों तक सीमित है। अतः इसके निष्कर्षों को व्यापक स्तर पर या अन्य जिलों/राज्यों पर सीधे लागू नहीं किया जा सकता।

- **शैक्षिक स्तर का सीमांकन:**

  अध्ययन में केवल कक्षा 3 से 5 तक के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। इससे निम्न (कक्षा 1-2) या उच्च कक्षाओं (6वीं के आगे) के छात्रों की हिंदी अधिगम प्रक्रिया का विश्लेषण इस अध्ययन के अंतर्गत नहीं किया गया।

- **प्रतिचयन सीमाएं:**

  प्रतिचयन की प्रक्रिया में गैर-संभाव्यता नमूनाकरण विधि के अंतर्गत उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण अपनाई गई है, जिससे परिणामों की सामान्यीकरण की संभावना सीमित हो जाती है।

- **उपकरण सीमाएँ:**

  डेटा संकलन के लिए प्रयोग में लाई गई प्रश्नावलियाँ शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के लिए भिन्न-भिन्न रूप में तैयार की गई। यद्यपि उनकी वैधता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया, फिर भी उत्तरदाता की समझ, ईमानदारी और तत्परता अध्ययन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है।

- **समय एवं संसाधन सीमा:**

  अध्ययन एक सीमित समयावधि एवं सीमित संसाधनों के अंतर्गत सम्पन्न किया गया, जिससे अधिक विस्तृत प्रतिचयन अथवा अन्य क्षेत्रीय तुलना का अवसर नहीं मिल सका।

1.15 शोध प्रश्न

1. प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य का क्या स्थान है?
2. बाल साहित्य का उपयोग विद्यार्थियों के भाषा अधिगम एवं रचनात्मक विकास को किस प्रकार प्रभावित करता है?
3. शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक बाल साहित्य की उपयोगिता को किस रूप में स्वीकार करते हैं?
4. क्या बाल साहित्य की प्रभावशीलता को लेकर इन तीनों हितधारकों (शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक) के दृष्टिकोणों में कोई महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है

2 द्वितीय अध्याय : साहित्य समीक्षा

2.1 प्रस्तावना

शोध प्रक्रिया में साहित्य समीक्षा (Literature Review) एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है, जिसके माध्यम से शोधकर्ता अपने अध्ययन विषय से संबंधित पूर्व में किए गए कार्यों, विचारों, सिद्धांतों और उपलब्ध स्रोतों का गहन अध्ययन करता है। इसका का मुख्य उद्देश्य यह जानना होता है कि जिस विषय पर वर्तमान शोध किया जा रहा है, उस क्षेत्र में अब तक क्या-क्या कार्य हो चुके हैं, किन-किन बिंदुओं पर विचार किया गया है, और वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता तथा प्रासंगिकता क्या है। यह एक ऐसा विश्लेषणात्मक अभ्यास है जो शोध की दिशा तय करता है और शोधकर्ता को यह स्पष्ट करता है कि उसके अध्ययन का स्वरूप पूर्ववर्ती अध्ययनों से किस प्रकार भिन्न है या किस सीमा तक उसका विस्तार करता है। यह अध्याय शोध कार्य को एक वैचारिक और सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है, साथ ही यह भी सुनिश्चित करता है कि शोधकर्ता अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचे और अपने अध्ययन को नवाचार की दिशा में ले जा सके।

साहित्य समीक्षा (Literature Review): अनुसंधानकर्ता द्वारा जानबूझ कर किया गया एक प्रयत्न जो उसने अपने अनुसंधान अध्ययन के प्रकरण पर अब तक क्या किया जा चुका है और क्या नहीं किया गया है यह जानकारी प्राप्त करने के लिए अध्ययन ने सम्बन्धित सभी प्रकार की उपलब्ध सूचनाओं का मूल्याकन एवं समीक्षा करने के लिए किया जाता है। **(मंगल & मंगल, 2014)**

"प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की भूमिका" विषय से सम्बंधित किए गए पूर्व शोध कार्यों और विद्वानों की मान्यताओं के आधार पर यह देखा गया है कि बाल साहित्य का समावेश यदि सुनियोजित ढंग से भाषा शिक्षण में किया जाए, तो वह न केवल बालकों की भाषा दक्षता को बढ़ा सकता है बल्कि उनमें सामाजिक मूल्यों, नैतिक चेतना और सौंदर्य बोध का भी विकास कर सकता है। बाल साहित्य में प्रयुक्त सरल भाषा, चित्रों का प्रयोग, लयात्मकता तथा कथात्मकता बच्चों के लिए अधिक बोधगम्य और आकर्षक होती है, जिससे उनका ध्यान भाषा की ओर स्वतः आकर्षित होता है।

अतः यह साहित्य समीक्षा अध्याय शोध के लिए वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार करता है और यह दर्शाता है कि किस प्रकार बाल साहित्य, हिंदी शिक्षण को अधिक जीवंत, प्रभावशाली और बाल-केंद्रित बना

सकता है। इस समीक्षा के आधार पर शोधकर्ता यह स्पष्ट कर सकेगा कि उसके द्वारा चयनित शोध विषय का शैक्षिक जगत में क्या महत्व है और वह पूर्ववर्ती शोधों से किस प्रकार आगे बढ़ रहा है।

2.2 सम्बंधित साहित्य समीक्षा

1. **(दुबे, 2020)** द्वारा किया गया शोध-पत्र **"बाल साहित्य का वर्तमान औचित्य"** में यह स्पष्ट किया गया है कि भारत जैसे युवा देश में बच्चों का सर्वांगीण विकास अत्यंत आवश्यक है। बालक अपने जीवन के प्रारंभिक आठ वर्ष अर्थात् प्राथमिक स्तर के शिक्षा में अत्यधिक जिज्ञासु, ग्रहणशील और संवेदनशील होते हैं। इस अवस्था में यदि उन्हें उचित बाल साहित्य उपलब्ध कराया जाए, तो न केवल उनका बौद्धिक विकास होता है बल्कि वे नैतिकता, संस्कृति, और सामाजिक मूल्यों से भी परिपूर्ण हो सकते हैं। हिंदी शिक्षण की शुरुआत बाल साहित्य से ही होनी चाहिए क्योंकि वही बच्चे को भाषा से जोड़ता है। "पंचतंत्र", "सिंहासन बत्तीसी", "रंगा और छोटू" जैसी कथाएं बच्चों में भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करती हैं और भावनात्मक स्तर पर भी उन्हें जोड़ती हैं। शोध में यह संकेत भी मिलता है कि पाठ्यक्रम से बाहर ऐसे साहित्य को शामिल करना चाहिए जो प्रेरणादायक और मूल्यपरक हो।
2. **(कुमार, 2021)** ने अपने शोध लेख **"हिंदी बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान के सार और महत्त्व का अनावरण: एक व्यापक विश्लेषण"** में बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान की भूमिका का व्यापक विश्लेषण किया है। लेखक डॉ. अनिल कुमार ने यह स्पष्ट किया है कि बाल मनोविज्ञान केवल मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन नहीं है, बल्कि यह बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास को समझने का माध्यम भी है। साहित्यिक दृष्टिकोण से देखें तो बाल साहित्य का निर्माण तभी सार्थक होता है जब उसमें बालकों की मानसिकता, अनुभवों, कल्पनाओं और संवेदनाओं की स्पष्ट झलक हो। लेख में यह स्थापित किया गया है कि बच्चों की भाषा, व्यवहार, रुचियों और अभिरुचियों को ध्यान में रखते हुए लिखे गए साहित्य से न केवल उनकी भाषा विकास होती है, बल्कि यह उनकी भावनात्मक संतुलन, आत्मबोध और समाजबोध को भी दिशा देता है। लेखक ने यह भी रेखांकित किया है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में 'बाल केंद्रित शिक्षा' का आधार बाल मनोविज्ञान ही है, जो बच्चों की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निरंतर नवाचार की ओर प्रेरित करता है। अतः बाल साहित्य केवल मनोरंजन या नैतिकता

का माध्यम न होकर, एक समग्र मनोवैज्ञानिक औजार के रूप में उभरता है, जो बालकों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. **(शर्मा, 2024)** ने अपने शोध लेख **"हिंदी बाल साहित्य लेखन की परंपरा: एक अवलोकन"** में हिंदी बाल साहित्य की ऐतिहासिक यात्रा को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। लेख में प्राचीन ग्रंथों जैसे पंचतंत्र, हितोपदेश, जातक आदि से लेकर भक्तिकालीन बाल वर्णन और आधुनिक युग में भारतेंदु हरिश्चंद्र जैसे लेखकों के योगदान को रेखांकित किया गया है। लेखिका ने बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं– बाल कविता, कहानी, नाटक, विज्ञान कथाएँ, लोककथाएँ आदि का उल्लेख कर यह स्पष्ट किया है कि ये रचनाएँ बच्चों के बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक हैं। यह आलेख बाल साहित्य के महत्व और उसकी विकास यात्रा का एक सारगर्भित व शोधपरक प्रस्तुतिकरण है।
4. **(तिवारी, 2024)** द्वारा रचित आलेख **"बाल साहित्य का संदर्भ और हिंदी साहित्य"** में बाल साहित्य की स्पष्ट परिभाषा, स्वरूप और उसके महत्व को रेखांकित किया गया है। लेखिका ने बताया कि बच्चों के लिए लिखा गया साहित्य वही कहलाता है जो उनकी मानसिकता, भाषा, और अनुभवों के अनुकूल हो। लेख में यह भी स्पष्ट किया गया है कि बाल साहित्य को प्रभावी बनाने के लिए बाल मनोविज्ञान की समझ आवश्यक है। यह साहित्य बच्चों की जिज्ञासा, रचनात्मकता और सामाजिक समझ को विकसित करने में सहायक होना चाहिए। संक्षेप में, यह आलेख बाल साहित्य के स्वरूप और उसकी भूमिका को शोधपरक दृष्टि से प्रस्तुत करता है।
5. **(द्विजा, 2024)** द्वारा रचित आलेख **"इक्कीसवीं सदी का हिंदी बाल साहित्य"** हिंदी बाल साहित्य के विकास, वर्तमान स्थिति और भविष्य की दिशा पर केंद्रित है। इसमें बाल साहित्य की भूमिका, बच्चों की बदलती मानसिकता, और मीडिया के प्रभाव पर चर्चा की गई है। लेख में यह बताया गया है कि डिजिटल युग में बच्चों की रुचियाँ बदल रही हैं, जिससे बाल साहित्य को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। लेखक ने बाल साहित्य को और अधिक प्रासंगिक और आकर्षक बनाने के लिए तकनीकी उपकरणों के उपयोग और सांस्कृतिक विविधता की प्रस्तुति की सिफारिश की है। यह आलेख बाल साहित्य के क्षेत्र में गहरे शोध और विकास की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

6. **(सेठी, 2023)** द्वारा रचित शोध आलेख **"बाल-साहित्य की गत्यात्मक आलोचना के मूल्य निर्धारक"** डॉ. सुरेन्द्र विक्रम के योगदान पर केंद्रित है, जिसमें गत्यात्मक आलोचना की परिभाषा और उसकी महत्वता को समझाया गया है। डॉ. सेठी ने बाल-साहित्य की समीक्षा को समकालीन संदर्भ में प्रस्तुत किया और यह बताया कि बाल-साहित्य को समय, समाज और संस्कृति के बदलावों के साथ समझना जरूरी है। आलेख में यह भी रेखांकित किया गया है कि बाल-साहित्य समीक्षा को एक वैचारिक आंदोलन के रूप में देखा जाना चाहिए, ताकि उसकी प्रासंगिकता बनी रहे।
7. **(मोक्षेंद्र, 2023)** ने अपने शोध लेख **"बाल साहित्य के लिए आवश्यक निर्धारितियाँ"** में बाल साहित्य के प्रभावी सृजन हेतु आवश्यक मानदंडों पर प्रकाश डाला है। इसमें मुख्य रूप से चार बिंदुओं पर जोर दिया गया है। पहले, बाल साहित्य का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को मनोरंजन के साथ-साथ प्रेरणा और शिक्षा प्रदान करना है, ताकि वे इसे आत्मसात कर सकें। दूसरे, बाल साहित्य में विषय-वस्तु का चयन सोच-समझकर करना चाहिए, क्योंकि बच्चों और वयस्कों की अभिरुचियाँ और समस्याएँ अलग होती हैं। तीसरे, बच्चों की जिज्ञासा को उत्तेजित करने के लिए साहित्य में कौतूहल का समावेश आवश्यक है, जिससे वे ज्ञानार्जन की ओर प्रेरित हों। चौथे, बाल साहित्य में परामानवीय पात्रों का चित्रण बच्चों की मानसिकता और समझ के अनुसार किया जाना चाहिए, ताकि वे प्रेरित हो सकें। इस प्रकार, यह आलेख बाल साहित्य के सृजन में आवश्यक मानदंडों को स्पष्ट करता है, जो बच्चों के मानसिक और भावनात्मक विकास में सहायक हैं, और यह शोधकर्ताओं तथा बाल साहित्यकारों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकता है।
8. **(सिंह श. , 2020)** ने अपने शोध लेख **"बाल साहित्य एवं बाल साहित्यकार की जिम्मेदारी"** में बाल साहित्य के सृजन में लेखक की जिम्मेदारियों पर प्रकाश डाला है। लेखक के अनुसार, बाल साहित्य में बच्चों के मनोविज्ञान को समझना बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि बच्चे अपने आस-पास के परिवेश और ज्ञान को तेज़ी से ग्रहण करते हैं। इसलिए, लेखक को बच्चों की मानसिकता और समझ के स्तर को ध्यान में रखते हुए रचनाएँ प्रस्तुत करनी चाहिए। लेख में यह भी कहा गया है कि रचनाएँ न तो अत्यधिक बौद्धिक होनी चाहिए, जिससे वे नीरस हो जाएं, और न ही वे सिर्फ मनोरंजन पर केंद्रित होनी चाहिए। बाल साहित्य में बच्चों के मानसिक और नैतिक विकास के लिए

विचारशीलता और प्रेरणा होनी चाहिए। इसके साथ ही, कल्पनाएँ जीवन की सच्चाइयों से परिचित कराती हुई होनी चाहिए, ताकि बच्चे वास्तविकताओं से रूबरू हो सकें। कुल मिलाकर, बाल साहित्यकारों को बच्चों की मानसिकता और समाज की आवश्यकताओं को समझकर रचनाएँ प्रस्तुत करनी चाहिए, ताकि उनका साहित्य न केवल मनोरंजनपूर्ण हो, बल्कि बच्चों के विकास में भी सहायक हो।

9. **('शशि', 2023)** के द्वारा समीक्षित लेख **"हिन्दी बाल कथा साहित्य सृजन और समीक्षा"** डॉ. देवी प्रसाद गौड़ की पुस्तक पर आधारित है। इस लेख में बाल साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर गहन विचार किया गया है, जो शोध कार्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। लेखक ने बाल साहित्य को राष्ट्रीय उन्नयन में अहम भूमिका निभाने वाला बताया है, क्योंकि बच्चों का विकास ही राष्ट्र का विकास है। इसके अलावा, पुस्तक में बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों में अच्छे संस्कारों का निर्माण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता, अंधविश्वास के खिलाफ जागरूकता फैलाने, ग्राम्य परिवेश को समझने, और भारतीय त्योहारों के महत्व पर चर्चा की गई है। इस प्रकार, यह पुस्तक बाल साहित्य के सृजन और समीक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है और शोधकर्ताओं एवं साहित्यकारों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकती है।

10. **(मालाकार, 2024)** द्वारा लिखित शोध आलेख **"बाल साहित्य के विकास में पत्रिकाओं का सफ़र"** में बाल साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विकास और पत्रिकाओं की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। लेख में बताया गया है कि प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक काल तक, बाल साहित्य ने बच्चों के नैतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 19वीं सदी से बाल साहित्य का संगठित रूप सामने आया, जिसमें 'बालबोधिनी' और 'बालसखा' जैसी पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 20वीं सदी में 'पराग', 'नंदन' और 'चंपक' जैसी पत्रिकाओं ने बाल साहित्य को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया, जिससे बच्चों की कल्पना शक्ति और शिक्षा को बढ़ावा मिला। लेख में यह भी उल्लेख किया गया है कि बाल साहित्य को बच्चों की बदलती रुचियों के अनुसार ढालना आवश्यक है, ताकि वे अपनी जड़ों से जुड़े रहें और एक सशक्त समाज का निर्माण कर सकें।

11. **(ओझा, 2024)** द्वारा लिखित शोध आलेख **"साहित्य को बाल मनोविज्ञान से जोड़ती विशिष्ट कृति: शेखर एक जीवनी"** में अज्ञेय के उपन्यास 'शेखर: एक जीवनी' के पहले भाग का विश्लेषण किया गया है, जो बालक शेखर के मानसिक विकास और अनुभवों पर केंद्रित है। लेखिका ने बाल मनोविज्ञान और साहित्य के परस्पर संबंध को रेखांकित करते हुए फ्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धांत के प्रभाव को स्पष्ट किया है। शेखर के बाल्यकाल के अनुभवों, जैसे भय, हीन भावना और मानसिक द्वंद्व, को उपन्यास में सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है, जो बालक के मानसिक विकास में वातावरण की भूमिका को उजागर करता है। यह आलेख साहित्य और मनोविज्ञान के अंतर्संबंध को उजागर करता है, जिससे शोधार्थियों को बाल साहित्य और मनोविज्ञान के अध्ययन में महत्वपूर्ण संदर्भ प्राप्त होते हैं।
12. **(आकांक्षा, 2024)** द्वारा लिखित शोध आलेख **"हिंदी बाल पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य और बाल भारती"** में हिंदी बाल पत्रकारिता के ऐतिहासिक विकास और समकालीन स्थिति का विश्लेषण किया गया है। लेख में भारतेन्दु हरिश्चंद्र से लेकर वर्तमान तक के प्रमुख योगदानकर्ताओं का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि कैसे बाल पत्रकारिता ने समय के साथ प्रगति की है। वर्तमान में लगभग 24-25 बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं, जिनमें 'बाल भारती' पत्रिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो 1948 से निरंतर प्रकाशित हो रही है। यह पत्रिका अपनी मनोरंजक शैली और ज्ञानवर्धक सामग्री के कारण बच्चों और बड़ों दोनों में लोकप्रिय है। लेख में बाल साहित्य के लेखन में बाल मनोविज्ञान की समझ की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि बच्चों के लिए लेखन एक विशिष्ट कौशल है। यह आलेख हिंदी बाल पत्रकारिता के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो शोधकर्ताओं को इस क्षेत्र की गहन समझ प्रदान करता है।
13. **(सिंह & कुमार, 2024)** ने प्रस्तुत शोध आलेख **"प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन"** में प्राथमिक विद्यालयों में हिन्दी विषय पढ़ाने वाले शिक्षकों के व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अध्ययन का उद्देश्य महिला एवं पुरुष शिक्षकों तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार में समानता या अंतर को समझना था। शोध में पाया गया कि महिला एवं पुरुष शिक्षकों के व्यवहार में कोई

महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, जबकि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों के व्यवहार में अंतर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जिसमें ग्रामीण शिक्षक अधिक प्रभावी पाए गए। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि शिक्षक का व्यवहार उसके आंतरिक विचारों और सामाजिक-शैक्षिक परिवेश का प्रतिबिंब होता है, जो विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। शोध कार्य शिक्षक शिक्षा, प्रशिक्षण और मूल्यांकन की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी एवं व्यवहारिक है।

14. **(मिश्र, 2022)** द्वारा रचित शोध आलेख **"बाल साहित्य का ऐतिहासिक परिदृश्य"** में बाल साहित्य के उद्भव, विकास और ऐतिहासिक यात्रा का गंभीरतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। लेखक ने यह प्रतिपादित किया है कि बाल साहित्य की जड़ें मानव सभ्यता की शुरुआत से जुड़ी हैं, जब मनोरंजन के माध्यम से नैतिकता और ज्ञान का संप्रेषण प्रारंभ हुआ। वेद, उपनिषद, पुराण, पंचतंत्र और जातक कथाओं में निहित बाल तत्त्वों से लेकर आधुनिक काल के संगठित प्रयासों तक, लेख में बाल साहित्य के स्वरूप, उद्देश्य और प्रभाव को विभिन्न युगों– आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल में क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास, सूरदास जैसे भक्तिकालीन कवियों के साहित्य में बाल मनोविज्ञान की झलक मिलती है, जबकि भारतेंदु युग से लेकर स्वतंत्रता पश्चात 'बालभारती', 'पराग', 'चंपक' जैसी पत्रिकाओं ने बाल साहित्य को संस्थागत रूप दिया। यह आलेख स्पष्ट करता है कि बाल साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि बच्चों के नैतिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास का सशक्त साधन है। डॉ. मिश्र का यह शोध कार्य बाल साहित्य के अध्ययन में एक उपयोगी और महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होता है।

2.3 शोध-अंतर

यद्यपि बाल साहित्य और हिंदी शिक्षण के संदर्भ में कई शोध कार्य हुए हैं, किंतु अधिकांशतः वे या तो बाल साहित्य के विश्लेषण तक सीमित हैं या फिर शिक्षण में उसकी उपयोगिता पर सतही रूप से विचार करते हैं। प्राथमिक स्तर पर तीनों हितधारकों– शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक की सामूहिक दृष्टि से बाल साहित्य के प्रभाव को केंद्र में रखकर शोध अपेक्षाकृत कम हुए हैं। यह शोध इस अंतर को भरने का प्रयास करता है।

3 तृतीय अध्याय : शोध विधि

3.1 प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा किसी भी विद्यार्थी की शैक्षणिक यात्रा की आधारशिला होती है। यह वह स्तर है जहाँ बच्चों के बौद्धिक, भाषाई, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास की नींव रखी जाती है। विशेषकर भाषा शिक्षण की दृष्टि से यह कालखंड अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इसी दौरान बच्चों में सोचने, समझने, अभिव्यक्त करने तथा संवाद स्थापित करने की क्षमता विकसित होती है। वर्तमान समय में जब पाठ्यपुस्तक-केंद्रित, रटंत शैली की पढ़ाई आलोचना का विषय बनी हुई है, तब बाल साहित्य आधारित शिक्षण एक विकल्प के रूप में उभर रहा है, जो विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास को ध्यान में रखता है।

किसी भी शोध कार्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें किस प्रकार की विधियों और उपकरणों का प्रयोग किया गया है। वर्तमान शोध अध्ययन में "प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की भूमिका" को समझने हेतु वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित तरीके से डेटा संकलन, प्रतिचयन तथा विश्लेषण की प्रक्रिया अपनाई गई है। शोध विधि अध्याय में प्रयुक्त प्रतिचयन प्रक्रिया, अध्ययन की समष्टि, उपकरणों की जानकारी, कार्यप्रणाली आदि का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि बाल साहित्य का उपयोग प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में किस प्रकार किया जा रहा है, उसका प्रभाव विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों पर क्या पड़ता है, तथा इससे भाषा अधिगम की प्रक्रिया में क्या बदलाव आता है। साथ ही, यह भी समझने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान शिक्षण विधियों का मूल्यांकन करते हुए बाल साहित्य को हिंदी शिक्षण का अभिन्न अंग बनाकर भाषा को किस प्रकार अधिक जीवंत, आकर्षक और प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

3.2 शोध की प्रकृति एवं स्वरूप

यह शोध वर्णनात्मक (Descriptive) तथा सर्वेक्षण आधारित (Survey-Based) है। इसमें विभिन्न हितधारकों (शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक) की राय व अनुभवों को एकत्र कर उनका विश्लेषण किया गया है।

3.3 शोध अध्ययन की समष्टि

वर्तमान शोध अध्ययन की समष्टि में बिहार राज्य के समस्तीपुर जिला के जलालपुर पंचायत अंतर्गत स्थित प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 3 से 5 तक के शिक्षक, विद्यार्थी, तथा उनके अभिभावक को शामिल किया गया है। यह समष्टि इसलिए चयनित की गई क्योंकि यह क्षेत्र ग्रामीण परिवेश में स्थित है और बाल साहित्य के प्रभाव का अध्ययन इस संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

3.4 प्रतिचयन प्रक्रिया

शोध की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए गैर-संभाव्यता नमूनाकरण विधि के अंतर्गत उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण (Purposive Sampling) का प्रयोग किया गया है। इस विधि के अंतर्गत शोधकर्ता ने विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु चयनित व्यक्तियों को शोध में सम्मिलित किया।

प्रतिचयन की संख्या इस प्रकार है:

समूह	संख्या
शिक्षक	**30**
विद्यार्थी	**30**
अभिभावक	**30**

तालिका-3.4.1: शोध में सम्मिलित प्रमुख हितधारक

इस प्रकार कुल 90 प्रतिभागियों को शोध प्रतिचयन में शामिल किया गया।

3.5 प्रदत संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण विधियाँ

शोध अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रश्नावली विधि को प्राथमिक डेटा संकलन उपकरण के रूप में अपनाया गया। इसके अंतर्गत तीनों हितधारकों के लिए पृथक प्रश्नावलियाँ तैयार की गईं:

3.5.1 शिक्षकों के लिए प्रश्नावली

इसमें बाल साहित्य के उपयोग, शिक्षण प्रक्रिया में उसके प्रभाव आदि से संबंधित 20 वस्तुनिष्ठ प्रश्न शामिल किए गए।

3.5.2 विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली

इसमें बाल साहित्य के प्रति रुचि, समझ, एवं भाषा विकास आदि से जुड़े 20 वस्तुनिष्ठ प्रश्न शामिल किए गए।

3.5.3 अभिभावकों के लिए प्रश्नावली

इसमें बच्चों की भाषा संबंधी प्रगति, घर पर बाल साहित्य की उपलब्धता एवं सहयोग आदि से संबंधित 20 वस्तुनिष्ठ प्रश्न सम्मिलित थे।

3.6 प्रदत (डेटा) विश्लेषण की प्रक्रिया

इस शोध में एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण चरणबद्ध ढंग से किया गया। शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक– तीनों हितधारकों की प्रतिक्रियाओं को श्रेणीबद्ध कर तालिका में कोडित किया गया। 'हाँ' और 'नहीं' उत्तरों की आवृत्तियाँ गिनी गईं, तथा औसत, मानक विचलन, मानक त्रुटि और प्रसरण की गणना कर उत्तर प्रवृत्तियों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।

4 चतुर्थ अध्याय : प्रदत विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन के अंतर्गत तीन प्रमुख हितधारकों– शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक से डेटा संकलित किया गया। संरचित प्रश्नावली के माध्यम से इन तीनों वर्गों की प्रतिक्रियाएँ प्राप्त की गईं, जिनके विश्लेषण के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि बाल साहित्य को लेकर उनकी क्या धारणाएँ, अनुभव एवं अपेक्षाएँ हैं। इस प्रक्रिया में यह समझने की कोशिश की गई कि क्या बाल साहित्य बच्चों के भाषा अधिगम में सहायक सिद्ध हो रहा है? क्या यह उनकी सीखने की प्रवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन ला रहा है? और क्या यह बालकों के समग्र विकास– भाषिक, मानसिक, नैतिक एवं सामाजिक में योगदान दे रहा है?

अतः यह प्रस्तावना इस तथ्य को रेखांकित करती है कि बाल साहित्य हिंदी भाषा शिक्षण का न केवल पूरक है, अपितु वह एक आवश्यक घटक के रूप में कार्य करता है। शोध का यह अध्याय प्राप्त प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण को अधिक प्रभावी और बालोन्मुख बनाने में बाल साहित्य की भूमिका कितनी व्यापक, गहन और संभावनाशील है।

4.2 शिक्षकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण

इस शोध अध्ययन में कुल 30 शिक्षकों को प्रतिभागी के रूप में सम्मिलित किया गया। शोध के उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षकों को एक सुव्यवस्थित प्रश्नावली प्रदान की गई, जिसमें कुल 20 प्रश्न शामिल थे। यह प्रश्नावली बाल साहित्य के हिंदी शिक्षण में प्रभावशीलता को जानने हेतु तैयार की गई थी (आकृति-4.2.1 एवं आकृति-4.2.2 देखें)।

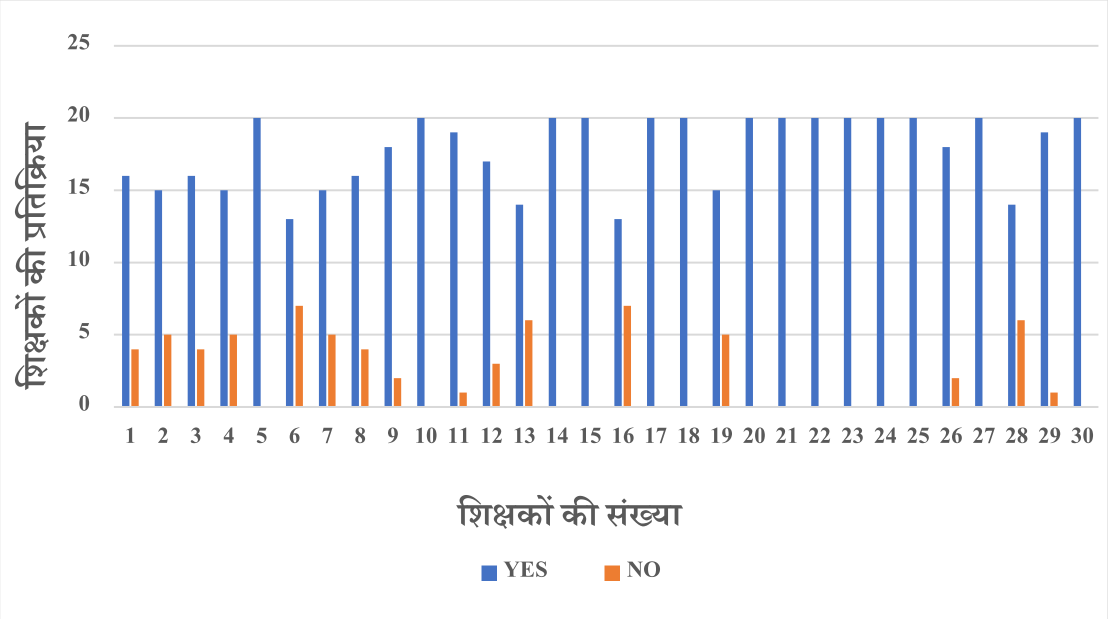

आकृति-4.2.1: शिक्षकों की प्रतिक्रिया

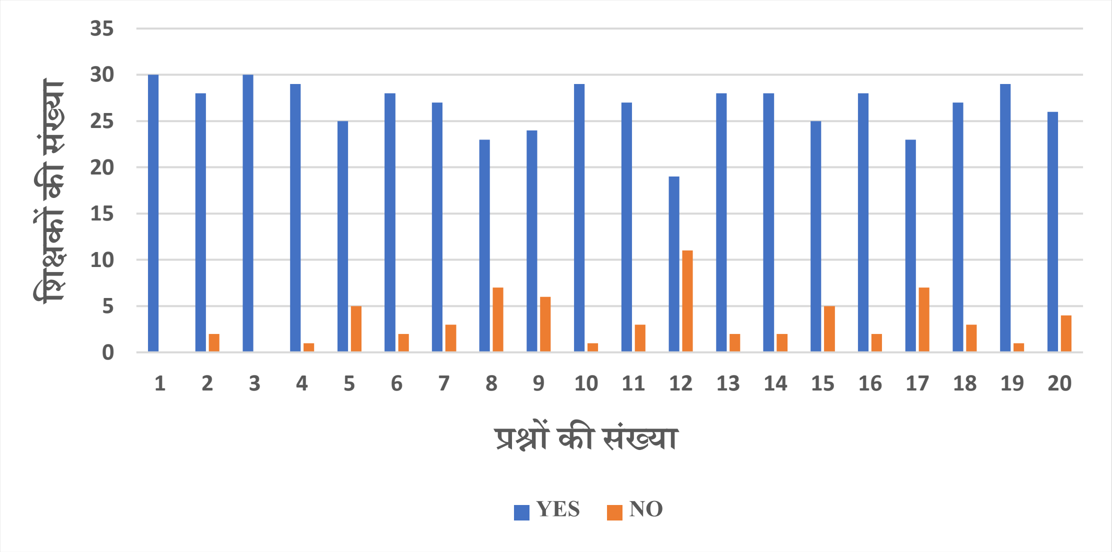

आकृति-4.2.2: शिक्षकों की प्रतिक्रिया

YES	
Mean (SD)	**17.77 (±2.54)**
SE	**0.46**
Variance	**6.46**

तालिका-4.2.1: शिक्षकों की प्रतिक्रिया 'हाँ' के रूप में

प्राप्त आँकड़ों (तालिका-4.2.1) के अनुसार, शिक्षकों द्वारा 'हाँ' विकल्प का चयन औसत 17.77 पाया गया, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश शिक्षक बाल साहित्य को हिंदी शिक्षण के लिए एक आवश्यक और प्रभावशाली माध्यम मानते हैं। अधिकतर शिक्षकों ने यह स्वीकारा कि वे कक्षा-कक्ष में नियमित रूप से कहानियाँ, कविताएँ, लोरियाँ, चित्रकथाएँ और बाल नाटक जैसी साहित्यिक विधाओं का प्रयोग करते हैं। उनके अनुसार, बाल साहित्य विद्यार्थियों में भाषिक दक्षता, रचनात्मक अभिव्यक्ति, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक व्यवहार के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षकों ने यह भी अनुभव किया कि बाल साहित्य बच्चों की कल्पनाशीलता को पोषित करता है और उन्हें पाठ से भावनात्मक रूप से जोड़ता है। ऐसे साहित्यिक पाठ बच्चों की समझ को गहराई देते हैं, जिससे भाषा केवल शब्दों का ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन और समाज का बोध कराती है। जिन प्रश्नों में 'हाँ' उत्तरों की संख्या सर्वाधिक रही, वे विशेष रूप से बाल साहित्य के शैक्षणिक, नैतिक और मनोरंजक प्रभावों से संबंधित थे। यह भी देखा गया कि अधिकांश शिक्षक बाल साहित्य का प्रयोग करते हुए छात्रों को गतिविधियों में शामिल करते हैं, जैसे कहानी लेखन, कविता पाठ या संवाद अभिनय।

NO	
Mean (SD)	**2.23 (±2.54)**
SE	**0.46**
Variance	**6.46**

तालिका-4.2.2: शिक्षकों की प्रतिक्रिया 'नहीं' के रूप में

वहीं दूसरी ओर (तालिका-4.2.2), शिक्षकों द्वारा दिए गए 'नहीं' उत्तरों का औसत 2.23 रहा, जो यह दर्शाता है कि बाल साहित्य के संबंध में असहमति या उपयोग की बाधा सीमित है, परंतु पूरी तरह अनुपस्थित नहीं। जिन मामलों में 'नहीं' उत्तर प्राप्त हुए, वे मुख्यतः बाल साहित्य के उपलब्ध संसाधनों की कमी, समय के अभाव, और शिक्षकों को मिलने वाले प्रशिक्षण की कमी जैसे मुद्दों से जुड़े रहे। कुछ शिक्षकों ने यह भी इंगित किया कि पाठ्यक्रम की कठोरता और मूल्यांकन-केन्द्रित प्रणाली बाल साहित्य के नियमित प्रयोग में रुकावट बनती है।

इस प्रकार 'हाँ' (तालिका-4.2.1) और 'नहीं' (तालिका-4.2.2) दोनों प्रकार की प्रतिक्रियाओं को समेकित रूप से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों का दृष्टिकोण बाल साहित्य के प्रति अत्यंत

सकारात्मक और व्यवहारिक रूप से स्वीकारोक्ति-प्रधान है। वे इसे कक्षा-कक्ष में प्रभावी शिक्षण का उपकरण मानते हैं जो बच्चों की भाषा सीखने की रुचि को बढ़ाता है, भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत करता है और उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति को विस्तार देता है। हालाँकि कुछ व्यावहारिक चुनौतियाँ भी सामने आईं, जैसे– समय, सामग्री और प्रशिक्षण की सीमाएँ; परंतु शिक्षक यह भी मानते हैं कि यदि संस्थागत स्तर पर बाल साहित्य को लेकर नीतिगत समर्थन और संसाधन मिलें, तो इसका प्रयोग और अधिक प्रभावी व सतत हो सकता है।

अतः शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि वे बाल साहित्य को हिंदी भाषा शिक्षण का केवल एक सहायक नहीं, बल्कि आवश्यक अंग मानते हैं। वे इसके साथ आत्मीयता रखते हैं और चाहते हैं कि इसे समुचित स्थान और समर्थन प्राप्त हो, जिससे प्राथमिक शिक्षा अधिक समृद्ध और बाल-केंद्रित बन सके।

4.3 विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का विश्लेषण

इस शोध अध्ययन में कुल 30 विद्यार्थियों को प्रतिभागी के रूप में सम्मिलित किया गया। शोध के उद्देश्य की पूर्ति हेतु विद्यार्थियों को एक सुव्यवस्थित प्रश्नावली प्रदान की गई, जिसमें कुल 20 प्रश्न शामिल थे। यह प्रश्नावली बाल साहित्य के हिंदी शिक्षण में प्रभावशीलता को जानने हेतु तैयार की गई थी (आकृति-4.3.1 एवं आकृति-4.3.2 देखें)।

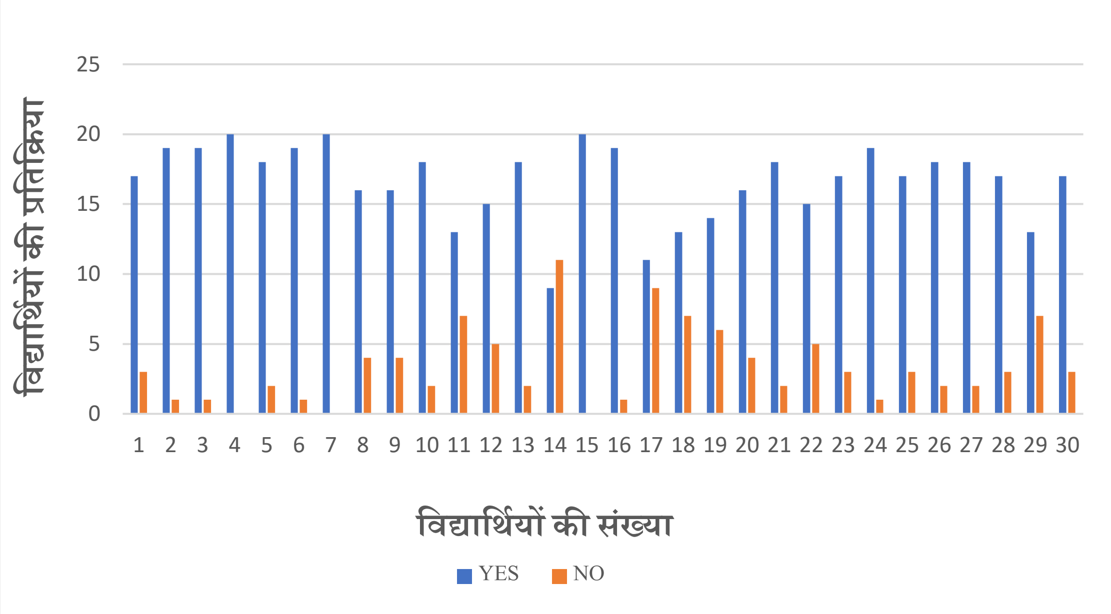

आकृति-4.3.1: विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया

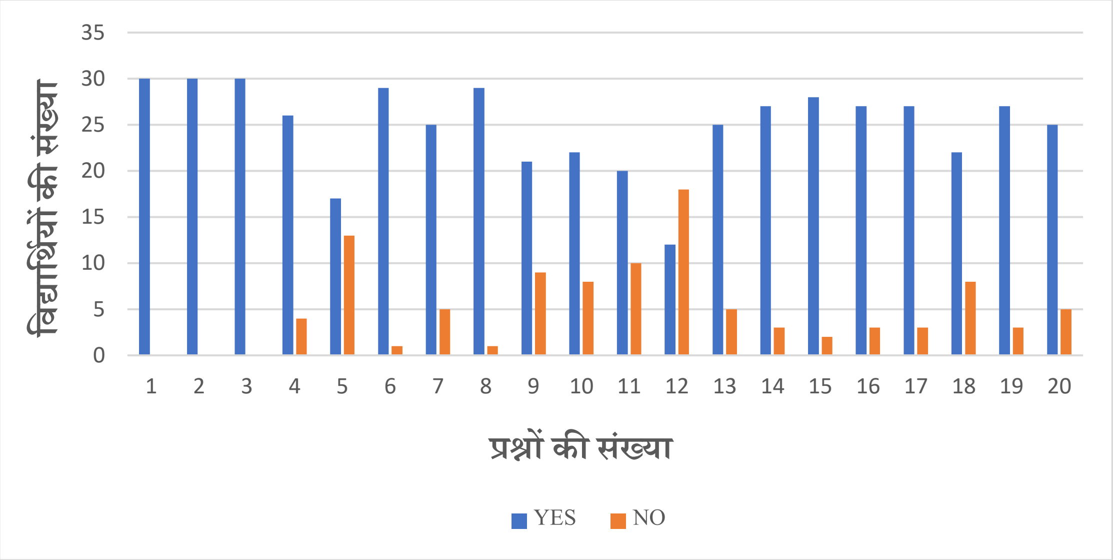

आकृति-4.3.2: विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया

YES	
Mean (SD)	**16.63 (±2.74)**
SE	**0.50**
Variance	**7.48**

तालिका-4.3.1: विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया 'हाँ' के रूप में

प्राप्त आँकड़ों (तालिका-4.3.1) के अनुसार, विद्यार्थियों द्वारा 'हाँ' विकल्प का चयन औसतन 16.63 रहा। यह उच्च औसत दर्शाता है कि बाल साहित्य को लेकर विद्यार्थियों की सहमति अत्यन्त दृढ़ है और बाल साहित्य उनके लिए न केवल रोचक है, बल्कि सीखने का एक प्रेरक माध्यम भी है। सर्वाधिक 'हाँ' उन्हीं प्रश्नों पर मिले (आकृति-4.3.2 देखें) जहाँ कहानियाँ, कविताएँ, चित्रकथाएँ या बाल-नाटक कक्षा-कक्ष में नियमित रूप से प्रयुक्त होते हैं इससे यह स्पष्ट है बच्चों ने स्वीकार किया कि उन्हें कहानियाँ, कविताएँ, चित्रकथाएँ पढ़ना या सुनना अत्यंत पसंद है और यह भी स्वीकारा कि ऐसे पाठ नये शब्द सिखाते हैं, कल्पना को पंख देते हैं और कठिन विषय-वस्तु को मनोरंजन में बदल देते हैं। 'हाँ' प्रतिक्रियाएँ (आकृति-4.3.1) यह भी संकेत करती हैं कि बाल साहित्य आधारित गतिविधियाँ– जैसे समूह-वाचन, कविता-पाठ, कहानी-लेखन या रोल-प्ले; विद्यार्थियों की ध्यान-एकाग्रता, मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति तथा रचनात्मकता को बढ़ाती हैं एवं वे पाठ को अधिक समय तक याद रखते और आत्मविश्वास से साझा करते हैं।

NO	
Mean (SD)	**3.37 (±2.74)**
SE	**0.50**
Variance	**7.48**

तालिका-4.3.2: विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया 'नहीं' के रूप में

इसके विपरीत, 'नहीं' उत्तरों का औसत केवल 3.37 रहा (तालिका-4.3.2)। यह अपेक्षाकृत छोटी संख्या इंगित करती है कि असहमति सीमित है, पर पूरी तरह नगण्य नहीं। जिन प्रश्नों पर कुछ विद्यार्थियों ने 'नहीं' कहा, वहाँ प्रमुख कारण यह उभरे कि– कक्षा में बाल साहित्य का उपयोग अनियमित है; कभी-कभी शिक्षक अधिक पाठ्य-पुस्तक-केन्द्रित या व्याकरण-केन्द्रित पद्धति पर लौट आते हैं; समय की कमी के कारण साहित्यिक गतिविधियाँ अधूरी छूट जाती हैं। कुछ बच्चों ने यह भी अनुभूत किया कि यदि चित्रों व अभिनय को पर्याप्त समय न दिया जाए, तो कथा-पाठ उतना रोचक नहीं रहता।

'हाँ' (तालिका-4.3.1) और 'नहीं' (तालिका-4.3.2) दोनों प्रकार की प्रतिक्रियाओं से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों का समग्र दृष्टिकोण मज़बूती से सकारात्मक है। बाल साहित्य से प्रेरित कक्षाओं में वे अधिक सक्रिय, जिज्ञासु और रचनात्मक दिखे। यह केवल भाषा-अधिगम नहीं, बल्कि भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक विकास का भी माध्यम सिद्ध हुआ। सीमित 'नहीं' उत्तर यह संकेत देते हैं कि प्रभाव को और गहरा करने के लिए साहित्यिक गतिविधियों की आवृत्ति तथा विविधता बढ़ाई जानी चाहिए, विशेषकर उन विद्यालय-दिनों में जहाँ समय-सारणी कड़ी हो। कुल मिलाकर, आँकड़ों से यह निष्कर्ष पुष्ट होता है कि बाल साहित्य का नियमित, योजनाबद्ध और सहभागिताशील उपयोग हिंदी शिक्षण को न केवल आनंदित करता है, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4.4 अभिभावकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण

इस शोध अध्ययन में कुल 30 अभिभावकों को प्रतिभागी के रूप में सम्मिलित किया गया। शोध के उद्देश्य की पूर्ति हेतु अभिभावकों को एक सुव्यवस्थित प्रश्नावली प्रदान की गई, जिसमें कुल 20 प्रश्न शामिल थे। यह प्रश्नावली बाल साहित्य के हिंदी शिक्षण में प्रभावशीलता को जानने हेतु तैयार की गई थी (आकृति-4.4.1 एवं आकृति-4.4.2 देखें)।

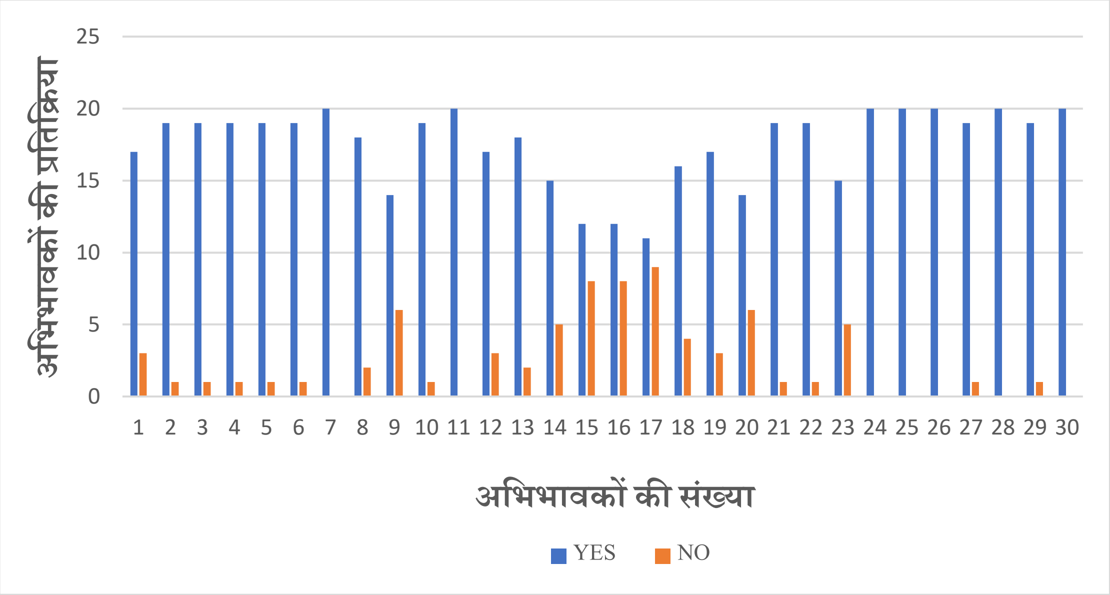

आकृति-4.4.1: अभिभावकों की प्रतिक्रिया

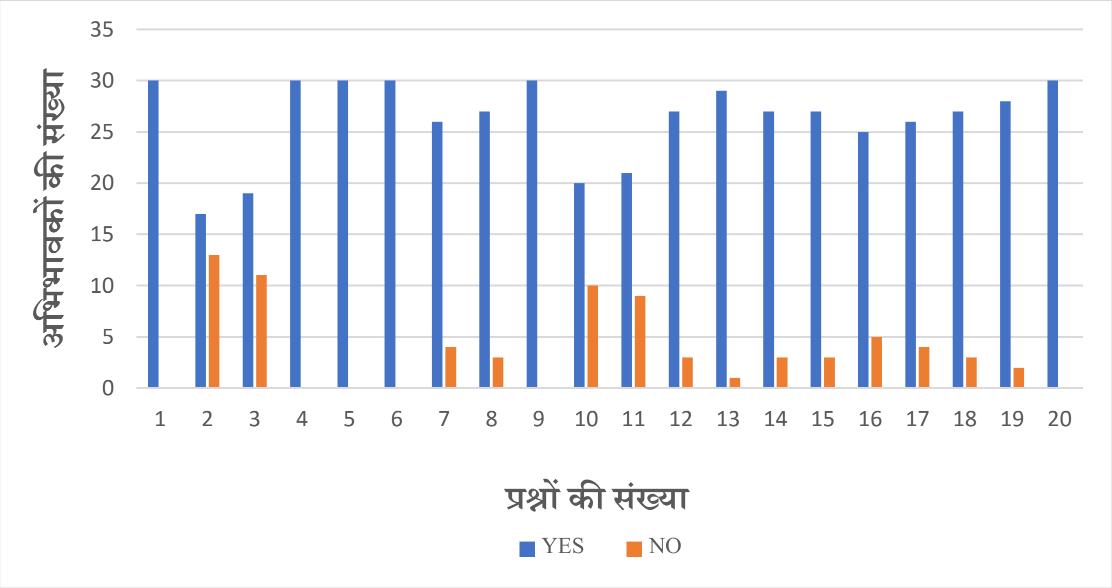

आकृति-4.4.2: अभिभावकों की प्रतिक्रिया

YES	
Mean (SD)	**17.53 (±2.69)**
SE	**0.49**
Variance	**7.22**

तालिका-4.4.1: अभिभावकों की प्रतिक्रिया 'हाँ' के रूप में

प्राप्त आँकड़ों (तालिका-4.4.1) के अनुसार, अभिभावकों द्वारा ‘हाँ’ उत्तर का औसत 17.53 रहा, जो यह दर्शाता है कि बाल साहित्य को लेकर उनकी सोच अत्यंत सहायक और सकारात्मक है। अधिकांश अभिभावकों ने यह स्पष्ट किया कि वे बच्चों के भाषा विकास और नैतिक शिक्षा में बाल साहित्य को एक प्रभावी माध्यम मानते हैं। जिन प्रश्नों में ‘हाँ’ उत्तरों की अधिकता रही, वे विशेष रूप से उन बिंदुओं से संबंधित थे जहाँ अभिभावक बच्चों को घर पर कहानियाँ सुनाते हैं, उनके लिए बाल-पत्रिकाएँ लाते हैं, या उन्हें साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रेरित करते हैं। अभिभावकों ने यह भी अनुभव किया कि बाल साहित्य के नियमित संपर्क में आने से बच्चों में सहानुभूति, सामाजिक व्यवहार, और संस्कृति के प्रति समझ विकसित हुई है। कई उत्तरों में यह संकेत मिला कि बच्चे स्कूल से लौटकर जो साहित्यिक सामग्री सीखते हैं, उसे घर पर पुनः प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनके सीखने की निरंतरता बनी रहती है।

NO	
Mean (SD)	**2.47 (±2.69)**
SE	**0.49**
Variance	**7.22**

तालिका-4.4.2: अभिभावकों की प्रतिक्रिया ‘नहीं’ के रूप में

इसके विपरीत, ‘नहीं’ उत्तरों का औसत मात्र 2.47 रहा, जो अत्यंत सीमित है (तालिका-4.4.2)। कुछ अभिभावकों ने संकेत किया कि उनके पास समय की कमी रहती है या वे स्वयं शिक्षित नहीं होने के कारण बच्चों को साहित्य पढ़कर नहीं सुना पाते। साथ ही, कुछ मामलों में बच्चों के विद्यालय में बाल साहित्य आधारित गतिविधियाँ नियमित रूप से न होने की स्थिति में अभिभावकों की सहभागिता भी सीमित पाई गई। यह भी देखा गया कि जहाँ साहित्यिक संसाधनों (जैसे पुस्तकालय, बाल-पत्रिकाएँ) की उपलब्धता कम है, वहाँ अभिभावक बच्चों को बाल साहित्य से जोड़ने में असमर्थ महसूस करते हैं।

‘हाँ’ (तालिका-4.4.1) और ‘नहीं’ (तालिका-4.4.2) दोनों प्रकार की प्रतिक्रियाओं को समेकित करने पर यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि अभिभावकों का समग्र दृष्टिकोण प्रबल रूप से सकारात्मक है। वे बाल साहित्य को केवल भाषा विकास का साधन न मानकर उसे बच्चों के नैतिक, सांस्कृतिक और व्यक्तित्व विकास का स्रोत मानते हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि बाल साहित्य के संपर्क से बच्चों में

विचारशीलता, भावनात्मक परिपक्वता और अभिव्यक्ति क्षमता में वृद्धि हुई है। सीमित संख्या में 'नहीं' उत्तर यह संकेत करते हैं कि यदि स्कूल और समुदाय स्तर पर अभिभावकों को साहित्यिक जागरूकता और संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ, तो वे और अधिक सक्रिय रूप से इस प्रक्रिया में सहभागी बन सकते हैं।

इस प्रकार, यह सिद्ध होता हैं कि बाल साहित्य को लेकर अभिभावकों में अपेक्षाकृत अधिक विश्वास, समर्थन और अपनापन है। यदि इस सहभागिता को संस्थागत समर्थन मिले, तो यह घर और विद्यालय के बीच एक रचनात्मक सेतु बन सकता है, जो बच्चों के हिंदी भाषा शिक्षण को और भी सुदृढ़ करेगा।

4.5 समेकित विश्लेषण एवं व्याख्या

प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की उपयोगिता पर आधारित इस शोध में तीन प्रमुख हितधारकों/समूहों– शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का गहन विश्लेषण किया गया (तालिका-4.5.1)।

शोध में सम्मिलित प्रमुख समूह		
समूह	**हितधारकों की संख्या**	**प्रश्नों की संख्या**
शिक्षक	**30**	**20**
विद्यार्थी	**30**	**20**
अभिभावक	**30**	**20**

तालिका-4.5.1: शोध में सम्मिलित प्रमुख समूह एवं प्रश्नों की संख्या

शोध में सम्मिलित तीनों हितधारकों– शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आँकड़ों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि बाल साहित्य की उपादेयता को लेकर एक ठोस और सामूहिक सहमति विद्यमान है। (तालिका-4.5.2) 'हाँ' उत्तरों का औसत (SD) क्रमशः 17.77 (±2.54) शिक्षकों में, 16.63 (±2.74) विद्यार्थियों में और 17.53 (±2.69) अभिभावकों में पाया गया। यह उच्च औसत स्पष्ट करता है कि सभी समूह बाल साहित्य को हिंदी भाषा शिक्षण का एक आवश्यक, प्रभावी और रुचिकर साधन मानते हैं। इसमें ध्यान देने योग्य बात यह है कि तीनों समूहों के उत्तरों का मानक विचलन (SD) भी परस्पर तुलनीय है, जिससे यह संकेत मिलता है कि उत्तरदाताओं की राय में न केवल सहमति है, बल्कि उत्तरों की स्थिरता और विश्वसनीयता भी अधिक है। मानक त्रुटि (SE) का मान 0.46 से 0.50 के बीच रहना दर्शाता है कि डेटा में कोई अत्यधिक विसंगति नहीं है और प्रतिक्रियाओं की सुसंगतता बनी हुई है।

	शिक्षकों	विद्यार्थियों	अभिभावकों
Mean (SD)	**17.77 (±2.54)**	**16.63 (±2.74)**	**17.53 (±2.69)**
SE	**0.46**	**0.50**	**0.49**
Variance	**6.46**	**7.48**	**7.22**

तालिका-4.5.2: समूह की प्रतिक्रिया 'हाँ' के रूप में

	शिक्षकों	विद्यार्थियों	अभिभावकों
Mean (SD)	**2.23 (±2.54)**	**3.37 (±2.74)**	**2.47 (±2.69)**
SE	**0.46**	**0.50**	**0.49**
Variance	**6.46**	**7.48**	**7.22**

तालिका-4.5.3: समूह की प्रतिक्रिया 'नहीं' के रूप में

'नहीं' उत्तरों का औसत अपेक्षाकृत बहुत कम पाया गया– शिक्षकों में 2.23, विद्यार्थियों में 3.37, और अभिभावकों में 2.47। इन न्यून उत्तरों का विश्लेषण यह संकेत देता है कि जहाँ कहीं नकारात्मक प्रतिक्रिया मिली भी है, वहाँ कारण संसाधनों की अनुपलब्धता, समय का अभाव, या शिक्षकों व अभिभावकों की सीमित संलग्नता जैसे व्यावहारिक मुद्दे रहे हैं, न कि बाल साहित्य की गुणवत्ता या उसकी उपादेयता पर संदेह।

यह आँकड़ा-संचालित विश्लेषण स्पष्ट करता है कि बाल साहित्य को लेकर तीनों हितधारकों की प्रतिक्रियाओं में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं है, बल्कि यह एकरूपता में सहमति का प्रतीक है। शिक्षक इसे एक शिक्षण उपकरण के रूप में, विद्यार्थी इसे आनंददायक और रचनात्मक अनुभव के रूप में, और अभिभावक इसे नैतिक और भाषिक विकास के माध्यम के रूप में देखते हैं।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बाल साहित्य हिंदी शिक्षण का एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जिसे सभी पक्ष न केवल स्वीकारते हैं, बल्कि इसके और व्यापक, योजनाबद्ध व सतत उपयोग के पक्षधर भी हैं। यदि इन प्रतिक्रियाओं के अनुरूप शैक्षिक नीतियाँ, पाठ्यक्रम और संसाधन संरचना में उचित परिवर्तन किए जाएँ, तो यह हिंदी शिक्षण को बोधगम्य, भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ तथा पूर्णतः बाल-केंद्रित बना सकता है।

5 पंचम अध्याय : सारांश, निष्कर्ष एवं अनुशंसाएँ

5.1 सारांश

यह शोध **"प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की भूमिका"** विषय पर केंद्रित है। शोध का उद्देश्य यह जानना था कि बाल साहित्य किस प्रकार बच्चों के भाषा विकास, रचनात्मकता और नैतिक समझ को बेहतर बनाने में सहायक होता है। हिंदी शिक्षण को अधिक प्रभावशाली, रोचक और बच्चों के अनुकूल बनाने में बाल साहित्य एक महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध होता है, क्योंकि यह न केवल भाषा की मूल दक्षताओं– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना को विकसित करता है, बल्कि बच्चों में कल्पनाशीलता, आत्म-अभिव्यक्ति और सामाजिक मूल्यों की समझ को भी बढ़ाता है।

शोध में बिहार राज्य के समस्तीपुर जिले के जलालपुर पंचायत स्थित प्राथमिक विद्यालयों के 30 शिक्षकों, 30 विद्यार्थियों और 30 अभिभावकों से संरचित प्रश्नावली के माध्यम से डेटा संकलित किया गया। अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि तीनों वर्ग– शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक बाल साहित्य की उपयोगिता को सकारात्मक रूप में स्वीकार करते हैं। 'हाँ' उत्तरों का औसत सभी में 16 से 18 के बीच पाया गया, जो दर्शाता है कि बाल साहित्य को हिंदी शिक्षण का आवश्यक और प्रभावशाली अंग माना जाता है। वहीं, 'नहीं' उत्तरों की संख्या बहुत कम रही, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि बाल साहित्य की उपयोगिता पर असहमति नगण्य है।

शोध से यह निष्कर्ष निकला कि यदि कक्षा-कक्ष में बाल साहित्य का नियमित, योजनाबद्ध और सहभागितामूलक प्रयोग किया जाए, तो हिंदी शिक्षण अधिक प्रभावी और बाल-केंद्रित हो सकता है। साथ ही, अध्यापकों को प्रशिक्षण, विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता और अभिभावकों की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है, ताकि बाल साहित्य का पूर्ण लाभ बच्चों को मिल सके और वे समग्र रूप से विकसित हो सकें।

5.2 निष्कर्ष

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह जानना था कि प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की क्या भूमिका है और यह किस प्रकार बच्चों के भाषा विकास में मदद करता है। शोध में शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक इस भूमिका को किस दृष्टि से देखते हैं। संरचित प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि बाल साहित्य न केवल भाषा अधिगम को सरल और प्रभावशाली बनाता है, बल्कि यह विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक एवं रचनात्मक विकास में भी सहायक होता है।

प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि तीनों हितधारकों ने बाल साहित्य को एक प्रभावशाली, रुचिकर और उपयोगी शैक्षणिक उपकरण माना है। शिक्षकों ने यह माना कि बाल साहित्य विद्यार्थियों के भाषा विकास, रचनात्मकता और नैतिक बोध को बढ़ाता है। विद्यार्थियों ने बताया कि कहानियाँ और कविताएँ उन्हें पढ़ाई में रुचि दिलाती हैं और समझने में आसानी होती है। अभिभावकों ने यह अनुभव साझा किया कि बाल साहित्य से बच्चों का व्यवहार, सोचने की शैली और भाषा में सुधार हुआ है। आँकड़ों में 'हाँ' उत्तरों का औसत 16.63 से 17.77 के बीच पाया गया, जबकि 'नहीं' उत्तरों की संख्या बहुत कम थी। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बाल साहित्य को लेकर सभी की सोच सकारात्मक और सहमति-प्रधान है, और यह हिंदी शिक्षण को सरल, सहज और बाल-केंद्रित बनाने में सहायक है।

5.3 अनुशंसाएँ

शोध निष्कर्षों के आधार पर यह अनुशंसा की जाती है कि प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण को सार्थक और बाल-केन्द्रित बनाने के लिए बाल साहित्य को पाठ्यक्रम का पूरक नहीं, बल्कि उसकी संरचनात्मक रीढ़ माना जाए। इसे विद्यालयी दिनचर्या में समाहित किया जाए, ताकि भाषा अधिगम बच्चों के अनुभवों, रुचियों और संस्कृति से सीधे जुड़ सके। पाठ्यचर्या का पुनर्गठन इस प्रकार हो कि कहानियों, कविताओं, लोककथाओं, चित्रकथाओं जैसे विविध साहित्यिक रूपों को पर्याप्त स्थान मिले साथ ही क्षेत्रीय व स्थानीय रचनाएँ भी सम्मिलित हों, जिससे बालक अपनी सांस्कृतिक जड़ों को पहचानें।

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बाल साहित्य के रचनात्मक प्रयोग, उपयुक्त चयन मानदंड और प्रभावी प्रस्तुति-कौशल को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए। विद्यालयों में समृद्ध पुस्तकालय, नियमित साहित्यिक वाचन गतिविधियाँ तथा बाल साहित्य-आधारित परियोजना कार्य

सुनिश्चित किए जाएँ। कक्षा के बाहर भी कहानी लेखन, कविता लेखन व नाट्य अभिनय जैसे कार्यक्रम आयोजित हों, ताकि बच्चे सक्रिय रूप से भाषा का सृजनात्मक प्रयोग कर सकें।

इसी क्रम में, अभिभावकों की सहभागिता महत्त्वपूर्ण है। उन्हें प्रोत्साहित किया जाए कि वे घर पर बच्चों को कहानियाँ सुनाएँ, पुस्तकों तक सहज पहुँच दिलाएँ और साहित्यिक संवाद को पारिवारिक संस्कृति का हिस्सा बनाएँ। डिजिटल युग की संभावनाओं को देखते हुए ऑडियो-बुक, एनिमेटेड कथाएँ तथा इंटरैक्टिव ई-पुस्तकों को भी कक्षा-कक्ष और घर दोनों में उपयोग किया जाए। इन सामूहिक प्रयासों से बाल साहित्य न केवल हिंदी भाषा शिक्षण को समृद्ध करेगा, बल्कि बच्चों में सोचने, महसूस करने और रचनात्मक अभिव्यक्ति की नई दिशाएँ भी उद्घाटित करेगा।

5.4 सीमाएँ और भविष्य के लिए सुझाव

यह शोध बाल साहित्य की भूमिका को समझने में सफल रहा, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ रही हैं। यह अध्ययन केवल बिहार राज्य के समस्तीपुर जिले के कुछ विद्यालयों तक सीमित था और कुल 90 प्रतिभागियों (30 शिक्षक, 30 छात्र, 30 अभिभावक) पर आधारित था। ऐसे में इसके निष्कर्षों को व्यापक स्तर पर लागू करने से पहले और बड़े क्षेत्र में अध्ययन किया जाना चाहिए। इसके अलावा, अध्ययन केवल प्रश्नावली आधारित था; यदि साक्षात्कार, कक्षा अवलोकन या साहित्य विश्लेषण भी शामिल होते तो और गहराई से समझ बन सकती थी।

भविष्य में इस विषय पर और गहन शोध किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, बाल साहित्य के डिजिटल स्वरूपों, जैसे– ऑडियो बुक्स, एनिमेशन, बाल ऐप्स आदि पर अध्ययन किया जा सकता है। साथ ही, यह भी अध्ययन किया जा सकता है कि बाल साहित्य बच्चों की जीवन मूल्य, आत्म-अभिव्यक्ति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को किस तरह प्रभावित करता है। यदि शोध को विभिन्न भाषाई क्षेत्रों में दोहराया जाए, तो बाल साहित्य की भूमिका को राष्ट्रीय स्तर पर और बेहतर रूप से समझा जा सकता है।

संदर्भ सूची

अंकिता तिवारी. (2024). बाल साहित्य का संदर्भ और हिंदी साहित्य. *अपनी माटी*.

अनिल कुमार. (2021). हिंदी बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान के सार और महत्त्व का अनावरण: एक व्यापक विश्लेषण. *International Journal of Innovation in Engineering Research & Management ISSN:2348-4918*.

आदिता द्विजा. (2024). इक्कीसवीं सदी का हिंदी बाल साहित्य. *अपनी माटी*.

एस.के. मंगल, & शुभ्रा मंगल. (2014). *व्यावहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियाँ*. दिल्ली-110092: PHI Learning Private Limited.

कु. आकांक्षा. (2024). हिन्दी बाल पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य और बाल भारती. *अपनी माटी*.

कुमार सर्वेश. (2012). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. दिल्ली: सार्थक प्रकाशन.

कुसुम कुञ्ज मालाकार. (2024). बाल साहित्य के विकास में पत्रिकाओं का सफ़र. *अपनी माटी*.

जे. सी. अग्रवाल, & पी. भोला. (2014). *शिक्षा दर्शन एक अध्ययन*. नई दिल्ली: SHIPRA PUBLICATION.

डॉ. नितिन सेठी. (2023). बाल-साहित्य की गत्यात्मक आलोचना के मूल्य निर्धारक. *साहित्य कुंज*.

डॉ. नीलमा दुबे. (2020). बाल साहित्य का वर्तमान औचित्य. *अंतर्राष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*.

डॉ. प्रवीन चन्द्र श्रीवास्तव. (2006). *प्रारम्भिक शिक्षा के मूलभूत तत्त्व*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.

डॉ. मनोज मोक्षेंद्र. (2023). बाल साहित्य के लिए आवश्यक निर्धारितियाँ. *साहित्य कुञ्ज*.

डॉ.श्रीकांत मिश्र. (2022). बाल साहित्य का ऐतिहासिक परिदृश्य. *Knowledgeable Research*.

दिनेश पाठक 'शशि'. (2023). हिंदी बाल कथा साहित्य सृजन और समीक्षा. *सेतु: सकारात्मक प्रयोजनावादी आलेखों का संग्रह*.

दीप शिखा शर्मा. (2024). हिंदी बाल साहित्य लेखन की परंपरा : एक अवलोकन. *अपनी माटी*.

प्रो. धनजी प्रसाद. (17 दिसंबर 2020). *भाषा और भाषा प्रोद्योगिकी*. भाषा और भाषा प्रोद्योगिकी वेब साईट: https://lgandlt.blogspot.com/2020/12/language-as-system.html से पुनर्प्राप्त

प्रो. धनजी प्रसाद. (1 दिसंबर 2021). *भाषा और भाषा प्रोद्योगिकी*. भाषा और भाषा प्रोद्योगिकी वेब साईट: https://lgandlt.blogspot.com/2021/12/language-teaching-and-language-learning.html से पुनर्प्राप्त

राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (2020). *शिक्षा मंत्रालय*. शिक्षा मंत्रालय वेब साईट: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf से पुनर्प्राप्त

रोहिताश सिंह, & डॉ.योगेश कुमार. (2024). प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन. *International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR]*.

शेर सिंह. (23 फरवरी 2020). *बाल साहित्य एवं बाल साहित्यकार की जिम्मेदारी*. दिव्य हिमाचल वेब साईट :

https://www.divyahimachal.com/2020/02/%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%B2-%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF-%E0%A4%8F%E0%A4%B5%E0%A4%82-%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%B2-%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A4%A4/ से पुनर्प्राप्त

श्रुतिकान्त पाण्डेय. (2014). *हिंदी भाषा और इसकी शिक्षण विधियाँ* . Delhi: PHI Learning Private Limited.

सरस्वती पाण्डेय, & गोविन्द पाण्डेय. (2020). *हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिस्ठ इतिहास*. इलाहाबाद: अभिव्यक्ति प्रकाशन.

साक्षी ओझा. (2024). साहित्य को बाल मनोविज्ञान से जोड़ती विशिष्ट कृति : शेखर एक जीवनी. *अपनी माटी*.

परिशिष्ट-I

शिक्षक के लिए प्रश्नावली

व्यक्तिगत जानकारी

1. नाम : ____
2. विद्यालय का नाम : ____
3. अनुभव : ____

निर्देश

कृपया इन प्रश्नों का उत्तर देने से पहले निम्नलिखित निर्देश पढ़ें:

1. यह प्रश्नावली शिक्षकों से बच्चों के हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य के भूमिका पर जानकारी प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन की गई है।
2. इस सर्वेक्षण से यह समझने में मदद मिलेगी कि प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य बच्चों की भाषा, सोच एवं सामाजिक विकास में किस प्रकार योगदान करता है।
3. इस प्रश्नावली का उत्तर गोपनीय रखा जाएगा।
4. कृपया सभी प्रश्नों का उत्तर दें।

बाल साहित्य के प्रभाव पर आधारित प्रश्नावली

1. क्या बाल साहित्य बच्चों को हिंदी भाषा समझने में मदद करता है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
2. क्या आपने बाल साहित्य का प्रयोग अपने कक्षा पाठ्यक्रम में किया है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
3. क्या बाल साहित्य बच्चों में हिंदी की समझ और बोलने की क्षमता को बढ़ाता है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
4. क्या बाल साहित्य को पढ़ने से बच्चों की शब्दावली में वृद्धि होती है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
5. क्या बाल साहित्य बच्चों में भाषा के माध्यम से रचनात्मकता को उजागर करने में मदद करता है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
6. क्या बाल साहित्य बच्चों के मानसिक और भावनात्मक विकास में सहायक है?
   हाँ ☐ नहीं ☐

7. क्या बाल साहित्य को पढ़ने से बच्चों में सोचने की क्षमता एवं कल्पनाशक्ति की वृद्धि होती है?

हाँ ☐ नहीं ☐

8. क्या बाल साहित्य पढ़ने से बच्चों को हिंदी व्याकरण समझने में मदद मिलती है?

हाँ ☐ नहीं ☐

9. क्या बाल साहित्य बच्चों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

10. क्या बाल साहित्य बच्चों को अच्छे नैतिक मूल्यों की शिक्षा देता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

11. क्या बाल साहित्य के पाठ से बच्चों के विचार एवं अभिव्यक्ति में सुधार होता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

12. क्या बाल साहित्य के अध्ययन से बच्चों में समग्र विकास होता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

13. क्या बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों की साहित्यिक रुचि को बढ़ाया जा सकता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

14. क्या बाल साहित्य को पाठ्यक्रम में शामिल करने से कक्षा में बच्चों की सक्रियता बढ़ती है?

हाँ ☐ नहीं ☐

15. क्या आप बाल साहित्य को बच्चों के लिए एक प्रभावी शैक्षिक उपकरण मानते हैं?

हाँ ☐ नहीं ☐

16. क्या बाल साहित्य पढ़ने से बच्चों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि बढ़ता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

17. क्या बाल साहित्य के अध्ययन से बच्चों को अपने परिवेश एवं समाज को समझने में मदद मिलती है?

हाँ ☐ नहीं ☐

18. क्या बाल साहित्य बच्चों में आत्म-विश्वास बढ़ाता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

19. क्या बाल साहित्य को कक्षा में पढ़ाने से बच्चों के सोचने और संवाद करने की शैली में बदलाव आता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

20. क्या आप बाल साहित्य को प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में अधिक स्थान देने के पक्षधर हैं?

हाँ ☐ नहीं ☐

परिशिष्ट-II

बच्चों के लिए प्रश्नावली

व्यक्तिगत जानकारी

1. नाम : ____

2. उम्र : ____

3. कक्षा : ____

4. विद्यालय का नाम : __________________________________

निर्देश

कृपया इन प्रश्नों का उत्तर देने से पहले निम्नलिखित निर्देश पढ़ें:

1. यह प्रश्नावली बच्चों से हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य के भूमिका पर जानकारी प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन की गई है।
2. इस सर्वेक्षण से यह समझने में मदद मिलेगी कि प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य बच्चों की भाषा, सोच एवं सामाजिक विकास में किस प्रकार योगदान करता है।
3. इस प्रश्नावली का उत्तर गोपनीय रखा जाएगा।
4. कृपया सभी प्रश्नों का उत्तर दें।

बाल साहित्य के प्रभाव पर आधारित प्रश्नावली

1. क्या आप स्कूल में हिंदी के पाठ्यक्रम को पसंद करते हैं?
   हाँ ☐ नहीं ☐
2. क्या आपने कभी बाल साहित्य पढ़ा है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
3. क्या बाल साहित्य को पढ़ने से आपको हिंदी भाषा को समझने में मदद मिलती है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
4. क्या आप बाल साहित्य के माध्यम से नई चीज़ें सीखने का आनंद लेते हैं?
   हाँ ☐ नहीं ☐
5. क्या बाल साहित्य को पढ़ने से आपकी कल्पना और सोचने की क्षमता में वृद्धि हुई है?
   हाँ ☐ नहीं ☐

6. क्या आप बाल साहित्य को कक्षा में पढ़ने के बाद उसे घर पर भी पढ़ना पसंद करते हैं?

हाँ ☐ नहीं ☐

7. क्या आपको लगता है कि बाल साहित्य आपकी रुचि को बढ़ाता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

8. क्या आपको बाल साहित्य में कहानी, कविता एवं पात्रों को समझना आसान लगता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

9. क्या आप बाल साहित्य के पात्रों से जुड़ाव महसूस करते हैं?

हाँ ☐ नहीं ☐

10. क्या आपको बाल साहित्य के जरिए हिंदी व्याकरण समझने में मदद मिलती है?

हाँ ☐ नहीं ☐

11. क्या बाल साहित्य पढ़ने से आपकी शब्दावली में वृद्धि हुई है?

हाँ ☐ नहीं ☐

12. क्या बाल साहित्य में वर्णित संस्कृति एवं परंपराओं को आप समझ पाते हैं?

हाँ ☐ नहीं ☐

13. क्या बाल साहित्य पढ़ने से आपका ध्यान एवं एकाग्रता बढ़ी है?

हाँ ☐ नहीं ☐

14. क्या बाल साहित्य आपको सही मूल्यों की शिक्षा देती है?

हाँ ☐ नहीं ☐

15. क्या बाल साहित्य पढ़ने से हिंदी के पाठ्यक्रम को और अधिक रोचक बनाने में मदद मिलती है?

हाँ ☐ नहीं ☐

16. क्या आप स्कूल में बाल साहित्य को अधिक पढ़ने की इच्छा रखते हैं?

हाँ ☐ नहीं ☐

17. क्या आपको अपने जीवन में बाल साहित्य से प्रेरणा मिली है?

हाँ ☐ नहीं ☐

18. क्या बाल साहित्य से बच्चों में सामाजिक समझ और संवेदनशीलता बढ़ती है?

हाँ ☐ नहीं ☐

19. क्या बाल साहित्य के माध्यम से हिंदी साहित्य के अन्य पहलुओं को समझने में मदद मिलती है?

हाँ ☐ नहीं ☐

20. क्या आप बाल साहित्य को अन्य किताबों की तुलना में ज्यादा पसंद करते हैं?

हाँ ☐ नहीं ☐

परिशिष्ट-III

अभिभावक के लिए प्रश्नावली

व्यक्तिगत जानकारी

1. माता/पिता नाम : ____
2. बच्चे का नाम : ____
3. बच्चे की कक्षा : ____

निर्देश

कृपया इन प्रश्नों का उत्तर देने से पहले निम्नलिखित निर्देश पढ़ें:

1. यह प्रश्नावली अभिभावक से बच्चों के हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य के भूमिका पर जानकारी प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन की गई है।
2. इस सर्वेक्षण से यह समझने में मदद मिलेगी कि प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य बच्चों की भाषा, सोच एवं सामाजिक विकास में किस प्रकार योगदान करता है।
3. इस प्रश्नावली का उत्तर गोपनीय रखा जाएगा।
4. कृपया सभी प्रश्नों का उत्तर दें।

बाल साहित्य के प्रभाव पर आधारित प्रश्नावली

1. क्या बाल साहित्य बच्चों की हिंदी भाषा की समझ को बढ़ाता है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
2. क्या आपके बच्चे को बाल साहित्य पढ़ने में रुचि है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
3. क्या आपने कभी अपने बच्चे को बाल साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
4. क्या बाल साहित्य को पढ़ने से आपके बच्चे की हिंदी शब्दावली में वृद्धि हुई है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
5. क्या बाल साहित्य बच्चों के लिए एक अच्छा शिक्षण उपकरण है?
   हाँ ☐ नहीं ☐
6. क्या बाल साहित्य बच्चों को सही मूल्यों की शिक्षा देने में मदद करता है?
   हाँ ☐ नहीं ☐

7. क्या आपके बच्चे ने बाल साहित्य के माध्यम से नई चीज़ें सीखीं हैं?

हाँ ☐ नहीं ☐

8. क्या बाल साहित्य बच्चों में सोचने की क्षमता को बढ़ाता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

9. क्या आपके बच्चे ने बाल साहित्य के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को बढ़ाया है?

हाँ ☐ नहीं ☐

10. क्या बाल साहित्य बच्चों के लिए मनोरंजन का एक अच्छा स्रोत है?

हाँ ☐ नहीं ☐

11. क्या आपके बच्चे ने बाल साहित्य पढ़ने के बाद अपनी भाषा पर अधिक ध्यान दिया है?

हाँ ☐ नहीं ☐

12. क्या बाल साहित्य बच्चों के सामाजिक एवं मानसिक विकास में मदद करता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

13. क्या बाल साहित्य बच्चों को अच्छा नागरिक एवं जिम्मेदार व्यक्ति बनने के लिए प्रेरित करता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

14. क्या आपके बच्चे को बाल साहित्य पढ़ाने से उनके भाषा में सुधार हुआ है?

हाँ ☐ नहीं ☐

15. क्या आपके बच्चे में बाल साहित्य के अध्ययन से दूसरों के प्रति सहानुभूति और समझ बढ़ी है?

हाँ ☐ नहीं ☐

16. क्या आपके बच्चे ने बाल साहित्य पढ़ने के बाद किताबों में और अधिक रुचि दिखाई है?

हाँ ☐ नहीं ☐

17. क्या बाल साहित्य बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है?

हाँ ☐ नहीं ☐

18. क्या आपके बच्चे ने बाल साहित्य के पात्रों से कुछ अच्छे गुण सीखे हैं?

हाँ ☐ नहीं ☐

19. क्या बाल साहित्य बच्चों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाता है?

हाँ ☐ नहीं ☐

20. क्या आपके बच्चे को और अधिक बाल साहित्य पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए?

हाँ ☐ नहीं ☐